॥ श्री ॥

आदुपुराण

सोनी हरिचंद भजनावली

यह पुस्तक
सोनी हरिचंद सिरोही नगरवालों ने बनाके
''धी एडवर्ड '' प्रिन्टींग प्रेस, घीकांटा,
अहमदाबाद संवत १९८१ में छपवाया

प्रथम आवृत्ति : १०००

आवृत्ति : चौदहवी कॉपी : १०००

संवत २०६७

मुद्रक : **देव ऑफसेट,** अहमदाबाद

॥ श्री नकलंगाय नम ॥

सूचना

श्रीयुत चौहान वंश, नख मादरेसा, हीरासिंहजी नंदन महाराज श्री अनोपस्वामीजी के परम शिष्य सोनी हरिचन्द द्वारा रचित ज्ञान, परम भक्ति का सार, भजन-भाव के उपदेश, मुख्य पुरुषों के हृदय में धारण करने का मुगती स्वरुपी अमूल्य मोतियों का हार हैं जिसमें - गुरु महिमा, आरब-लीला, सुरता, आरोधी, आगम प्रमाण, पृथ्वी प्रमाण, कूदरत पंछी, सरबंग और जोगाराम इत्यादि भजन राग सहित वर्णित है ।

आपका सेवक

सोनी हरिचंद

सिरोही नगर (राजपूताना)

विषय सूचि

क्रम सं.	भजन का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	कुण्डलिया, भजन	5
2.	साखी	6
3.	राग–जोगाराम भजन, राग वेराग	7 से 11
4.	गुरु महिमा, कुंडलिया	12 से 13
5.	अथ आरब लीला	14 से 16
6.	राग मलार सुरतारो भजन	17
7.	राग मलार भाटी भजन	18
8.	राग मलार नाटक भजन	19
9.	राग मलार आरती भजन	20
10.	भजन आरोधीप्रमाण सारंग भजन 1–4	21 से 24
11.	राग सारंग आगम प्रमाण भजन 1–4	25 से 28
12.	राग तेलंग कामोद भजन वाणी 1–4	29 से 32
13.	राग–मांड पृथ्वी प्रमाण भजन 1–8	33 से 40
14.	राग मलार–भजनवाणी मोरीया इत्यादि 1–5	41 से 45
15.	राग देश गणपतजी, पण्डतजी, साधुजी, आलमजी भजन	46 से 49
16.	राग बरहन जोगाराम भजन वाणी 1–4	50 से 53
17.	राग पीलू अजरी सरबंग भजन 1–5	54 से 58
18.	राग रासड़ा भजन 1–8	59 से 66
19.	राग खमास गुणेश इत्यादि भजन 1–7	67 से 73
20.	राग देशी भजन 1–2	74 से 75
21.	राग विहाग भजन 1–4	76 से 79

कुण्डलिया

संवत उगनीस मास हतो, जेठ सुदी पांचम ।
वर्ष हतो एकावनो, जदी लगाई गम ।।
जदी लगाई गम, छावणी एरनपुर की ।
मिलिया मोहे अनोप, बात कहते गुरु हर की ।।
कहे सोनी हरिचन्द, सुमरते अपणा दम ।
संवत उगनीस मास हतो, जेठ सुदी पांचम ।।

भजन

वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

धान जी वेचे जालि सुन जी वेचे,(२) वेचे है कपड़ों री गोठों रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

हीरा जी वेचे जालि पनाजी वेचे,(२) वेचे है माणक मोती रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

लख तो चौरासी जालिये कुंडियां बनाई,(२) करे है होम ने जाप रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

गायों रा होम करे, मांदगी चलावे,(२) मारे है जीवाजून सारी रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

मनखो रो होम करे, प्लेग चलावे,(२) मारे है सारोई संसारो रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

काचा जी तोड़े जाली, पाका जी तोड़े,(२) तोड़े है गोड़ नीयारु रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

देशां जी जावे जाली, परदेश जावे,(२) जाए जाए ने कठे जायो रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

दोय कर जोड़ अनोपदास बोले,(२) चार जुगो री एतो बातों रे ।
वेपारी जीवड़ा समझे ने रेणां रे... (टेर)

साखी

साद-साद नर बहोत केवावे, संत की राय कोई विरला पावे ।
जो कोई पावे संत की राय, तो मुख से गुंगा हो जावे ।।
कहे अनोप सुनो भाई संतों, ऐसा साधु मेरे मन भावे ।।

होवे ब्रहा ज्ञानी, कथे ब्रहाण्ड खंड ज्ञाना ।
ज्ञान कथने से क्या फल पावे, नहीं पावे नाम निशाणा ।।
कहे अनोप सुनो भाई साधु, खाली क्यु करणा ऐसाणा ।।

कपर फकीरी सब कोई लेवे, ज्ञान फकीरी लेवे नहीं कोई ।
जो कोई लेवे ज्ञान फकीरी, ज्यांरे धड़ पर शीश न होई ।।
कहे अनोप सुनो भाई साधु, सुख तो ज्यांरे घट में होई ।।

थोथा ज्ञान दाए नहीं आवे, जैसे वन में धेनु चरावे ।
दिन भर दिन भर अपनी चहावे, सांझ पड़े लकड़ी ले अकेला घर आवे ।।
कहे अनोप सुनो भाई साधु, झूठा झगड़ा दाए नहीं आवे ।।

राग जोगाराम भजन

सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का तोड़ी भरम की ताटी,
शशि और भांण एकण घर प्रकाशा, वटे मारी सुरता समाई ।।
सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का..... । टेर ।

भजनरी यूं पारख्र करिये, दरसे बाहर भीतर मांय । (२)
एक-एक में दमका पसारा,(२) वटे मारी सुरता ललचाई ।।
सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का..... । टेर ।

इंगला-पींगला सुख्रमण नाड़ी, तीनोंई एकण घर जाई ।(२)
सुख्रमण घाटी अमीरस वरसे,(२) कोई पीए मारा गुरुजी रा प्यासी ।।
सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का..... । टेर ।

सोवन शिख्रर घर वाजां बाजे, जाणे कोई जानन हार ।(२)
मुरली वेण सतारा जी बाजे,(२) बाजे अणहद रणुकारा ।।
सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का..... । टेर ।

गगन मंडल घर बंगला बणिया धनरे कारीगर सांई ।(२)
भवानीनाथ चरणे अनोपदास वणजे(२) वणज करे सो सदा सवाई ।।
सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का तोड़ी भरम की ताटी ।।

राग जोगाराम

हरदम हरिगुण गाता मेरे दाता, लहेर होय जब आता ।। टेर ।।

जल की बुन्द का बणिया पींजरा, सपतदीप आकाशा । (२)
नव सो नदियां चले नाभ से, (२)
चार ज्योत प्रकाशा मेरे दाता लहेर होय जब आता ।।
हरदम हरिगुण.....

तूं मेरा दाता मैं तेरा आशक, और वचन को चाहता । (२)
भूख्र प्यास की ख्बर आपको, (२)
आप देता जब ख्राता मेरे दाता लहेर होय जब आता ।।
हरदम हरिगुण.....

सर-चौगान में भट्टी चलाई, भरीया सुख्रमण माटा । (२)
पीवत-पीवत मारो जनम सुधार्यो, (२)
मतवाला साधु केवाता मेरे दाता लहेर होय जब आता ।।
हरदम हरिगुण.....

पत्ती नहीं तोडूं पत्थर नहीं पुजू, झूटा देव नहीं मनाता । (२)
रोम-रोम मांय बसे निरंजन,(२)
वोही वाट में जाता मेरे दाता लहेर होय जब आता ।।
हरदम हरिगुण.....

जोगी नहीं होवुं झटा नहीं बढ़ावुं, वचन पकड़िया साचा । (२)
दोय कर जोड़ अनोपदास बोलिया, (२)
अख्रंड ज्योत में समाता मेरे दाता लहेर होय जब आता ।।
हरदम हरिगुण.....

राग वेराग

गवरीरा नन्द गुणेशा ने समरु, हिरदा में हरिगुण गावुं मेरे दाता ।। (२)
पापी माणस मारी नजरे नहीं चाहु
शाह माणस मारी नजरे नहीं चाहु ।। टेर ।।

वसता खेड़ा उजड़ कीदा, उजड़ फेर बसाया मेरे दाता ।। (२)
पापी माणस मारी नजरे नहीं चाहु
शाह माणस मारी नजरे नहीं चाहु ।। गवरीरा नन्द .....

तल भर ताला राई भर कुंची, सतगुरु खोल बताया मेरे दाता ।। (२)
पापी माणस मारी नजरे नहीं चाहु
शाह माणस मारी नजरे नहीं चाहु ।। गवरीरा नन्द .....

खुल गया ताला हुआ उजियाला, हिरलां से जोत सवाया मेरे दाता ।। (२)
पापी माणस मारी नजरे नहीं चाहु
शाह माणस मारी नजरे नहीं चाहु ।। गवरीरा नन्द .....

दोय कर जोड़ अनोपदास बोले, धाया जैसा फल पाया मेरे दाता ।। (२)
पापी माणस मारी नजरे नहीं चाहु
शाह माणस मारी नजरे नहीं चाहु ।। गवरीरा नन्द .....

जोगाराम भजन

दस अवतार ज्यांरे एक मेरे दाता, मारम विरला जाणी है ।
सब सृष्टि में एक मेरे मालिक, मारम विरला जाणी है ।। टेर ।।
हिन्दू कहते राम-राम, मुसलमान कहे मेरी है । (२)
नहीं है मेरी नहीं है तेरी,(२) जाणे जिनकी शेरी है ।। दस अवतार ज्यांरे.....
नाभ कमल में रहत हमारी, वंक-नाल उलटाणी है ।(२)
स्वासे स्वास भजन की माला, (२) आ हर की ओलखाणी है ।। दस अवतार ज्यांरे....
जद सतगुरु मौपर कृपा कीनी, जदुणी वात विचारी है ।(२)
मोर मुगट पर हुआ प्रकाशा,(२) आ हर की ओलखाणी है ।। दस अवतार ज्यांरे.....
भवानीनाथ गुरु पूरण मलिया, दी हर की ओलखाणी है ।(२)
दोए कर जोड़ अनोपदास बोले,(२) अगम निगम ओलखाणी है ।। दस अवतार ज्यांरे...

भजन

मुं तो थाने समरु जल मुरारी ओ २, जल री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु अगन मुरारी ओ २, अगनी री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु धरणी मुरारी ओ २, धरणी री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु अनाज मुरारी ओ २, अनाज री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु दरख्रतों मुरारी ओ २, दरख्रतां री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु कपास मुरारी ओ २, कपास री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु गाय मुरारी ओ २, गायों री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु भेसिया मुरारी ओ २, भेसियां री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु घेटा मुरारी ओ २, घेटां री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु बकरा मुरारी ओ २, बकरां री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु ऊंट मुरारी ओ २, ऊंटों री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु हस्ती मुरारी ओ २, हस्तीयां री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु घोड़ा मुरारी ओ २, घोड़ों री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु गधा मुरारी ओ २, गधों री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु मानव मुरारी ओ २, मानवों री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
मुं तो थाने समरु जीवाजून मुरारी ओ २, जीवाजून री कमाई रा लेउ वारणाजी । २
दोय कर जोड़ अनोपदास बोलिया २, सतगुरु स्वामी थोरा लेउ वारणाजी । २

भजन

आद विचारो भाईयों भजन पेहचाणो,
जद पावो राम हमारो रे हां जी .... (२) ।। टेर ।।

साध हुआ ने भाईयों समझे नहीं जाणे,
झूठी झूठी झगड़ मचावे रे हां जी... ।। (२)
अकलोंरा आंधळा फरे भटकता, हीरा दूजो कने परखावे रे हां जी...। (२)

साचा साधु भाई साच बतावे,
कुरसों रे मन नही भावे रे हां जी... ।। (२)
अटे जो भूला भाई आगे ही भूला, भूला ने राम क्यों मिलावे रे हां जी... । (२)
आद विचारों भाईयों भजन.....

अपणा जो पेट में खदिया जो लागी,
वण रे खायो केम जावे रे हां जी...।। (२)
ज्ञान सुणियासु भाई भूख नही जावे, भूख तो खायो सूंही जावे रे हां जी... । (२)
आद विचारों भाईयों भजन.....

जनम-मरणरी जो खबर नही जाणे,
क्यों आया खाली मनख जमारे रे हां जी... ।। (२)
जीवतो तको तो भाईयो मुगती नही पाई, मुओ पुटी कण घर जावो रे हां जी...। (२)
आद विचारों भाईयों भजन.....

दोय कर जोड़ अनोपदास बोले,
मलियोंरा राम क्यों गमावो रे हां जी... ।। (२)
मनकी भरमना छोड़ दो जगत में, पद पावो निर्वाणा रे हां जी... । (२)
आद विचारों भाईयों भजन.....

।। श्री गणेशाय नम ।।

अथ गुरु महिमा लिख्यते

राग धुन चौपाई ।

सब संतों मिल सभा बनाई, हरिचन्द कहे सुनोरे भाई ।
पूरी प्रीत राम से राखो, मारो काल अमीरस चाखो ।।
साचा वचन शरीरां रखना, झूठा वचन कछु नहीं भखना ।
तंत वचन की शोभा भारी, पूजो गुरु समरणा धारी ।।
गुरु समरण की गीता गावे, जिनके पिंजर वचन समावे ।
गुरु करो अमीरस पावो, दल दरियावां निर्भय न्हावो ।।
सतरी बात जुगा में कीजे, गुरु समरण में अन्तर दीजे ।
महिमा करे गुरु को पूजे, दिल अन्तर में दीपक सूझे ।।
देखो गुरु सूरत कर साती, गुरु दीपक बिन कोरी बाती ।
हरिचन्द कहे सुनो सब माया, गुरु बिन मुक्ति कोई नहीं पाया ।।
सतगुरु वचन सदा सुखकारी, देखो सतगुरु ब्रह्म विचारी ।
अगम निगम की वाणी गावो, सतगुरु बिना भेद नहीं पावो ।।
गुरु सरवर जुग मछिया सारा, गुरु बिन दिल में घोर अंधारा ।
सतगुरु वचन जोग सेलांणी, उल्टा भोम चढ़ावत पाणी ।।
सतगुरु चन्दा सतगुरु भांण, उल्टा गुरु चलावत बाण ।
सतगुरु मिल्या पाया नेसा, बिन सतगुरु तो पत्थर जैसा ।।
सतगुरु पारस सतगुरु कंचन, सतगुरु वचन जीव का मंजन ।
सतगुरु सतगुरु हरदम ध्यावो, गुरु वचनों से मुक्ति पावो ।।
सतगुरु ने चौरासी मेटा, पवना जाय भवन में बैठा ।
ऐसा गुरु अमीरस पाया, दिल पिंजर का भेद बताया ।।

अनोपस्वामी सतगुरु पाया, सोनी हरिचन्द शीश नमाया ।
हरिचन्द कहे सुनो सब माया, गुरु बिन मुक्ति कोई नहीं पाया ।।
सतगुरु कुंची जग सब ताला, दे कुंची तब होवे उजियाला ।
सुरती जाय भवन में लागे, दुरमती दुविधा भय जद भागे ।।
चेला इन्दर रुपी रहवे, सतगुरु वचन उसी को देवे ।
सतगुरु वचन हिरदे में राखे, वो चेला अमर फल चाखे ।।
अमर बीज गुरु ने दीना, चेला शीश नमावे लीना ।
बोयो बीज प्रेम से ऊँगे, सतगुरु मिले शिखर गढ़ पूगे ।।
सतगुरु मिलिया सोजी पाई, सतगुरु भेदु अगम बताई ।
सतगुरु वचन प्रेम कर ध्यावो, पांचों ही उलट एकण घर लावो ।।
गुरु समरण की सेवा कीजे, हृदय कमल में सुरती दीजे ।
खण्ड ब्रह्मांड की लीला भारी, पूजो गुरु समरणा धारी ।।
अनोपस्वामी सतगुरु पाया, सोनी हरिचन्द शीश नमाया ।
हरिचन्द कहे सुनो सब माया, गुरु बिन मुक्ति कोई नहीं पाया ।।

कुण्डलिया

महिमा कही गुरु देव की, दिशे अपरम-पार ।
सतगुरु बैठे आप में, देखो दसवे द्वार ।।
देखो दसवे द्वार, सुन में बाग लगावो ।
जोवे फल की आस, प्रेम का पानी पावो ।।
कहे सोनी हरिचन्द, देव दर्शन की टेमा ।
कटे कर्म का पाप, देखलो गुरु की महिमा ।।

अथ आरब लीला लिख्यते

ओ३म गुरुजी आद बीज तो जल बोलिये, जल में ज्योत बोलिये, ज्योत में पवन बोलिये, तीन गुणों का परिब्रह्मा महावजर का बोलिये, परिब्रह्मा का पंड बोलिये, पंड सरुप पृथ्वी बोलिये, पृथ्वी के द्वार बोलिये, दोय तो नेत्र बोलिये, दोय तो नासिका के सुर बोलिये, दोय तो कान बोलिये, एक तो मुख्र बोलिये, एक तो इन्द्री बोलिये, एक तो गुदा बोलिये, नव जो द्वार बोलिये, नव द्वार का नव खंड बोलिये, दसमा तो शीश बोलिये, पीठ मस्तक का दसवां ब्रह्माण्ड बोलिये, शरीर तो महा वजर का बोलिये, रुप तो कासब का बोलिये, आहार तो जल का बोलिये, पांव तो चार बोलिये, गर्भ जो वारता बोलिये, पाषाण पर्वत तो हाड़ बोलिये, नव सौ नदियां तो नाड़ी बोलिये, गिरिमेर तो नाभ बोलिये, गिरिमेर के दोली दोय फणी नदी बोलिये, पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण चार जो खूंट बोलिये, दरियाव जो ओज बोलिये, सात जो कमल बोलिये, सात कमल का सात दीप बोलिये, चंद्र-भांण जो दम की ज्योत बोलिये, पवन जो स्वास बोलिये, तारा मंडल जो रतन प्रकाश बोलिये, गुण तो तीन बोलिये, रजो गुण में पवन बोलिये, तमो गुण में अगन बोलिये, सतो गुण में जल बोलिये, जल के रुप तो चार बोलिये, एक जल रुप तो आप बोलिये, एक जल रुप तो चंद्र में बोलिये, एक जल रुप तो जड़ में बोलिये, एक जल रुप तो चेतन में बोलिये, चार रुप तो जल का बोलिये, चार रुप तो अग्नि का बोलिये, एक अगन रुप तो पत्थर में बोलिये, एक अगन रुप तो भांण में बोलिये, एक अगन रुप तो जड़ में बोलिये, एक अगन रुप तो चेतन में बोलिये, चार रुप तो अगन का बोलिये,

चार रुप तो पवन का बोलिये, एक पवन रुप तो चंद्र में बोलिये, एक पवन रुप भांण में बोलिये, एक पवन रुप जड़ में बोलिये, एक पवन रुप चेतन में बोलिये, चार रुप तो पवन का बोलिये, द्वादश कला बोलिये, महा कुदरती बोलिये, गुण तो तीन बोलिये, महा वजर का बोलिये, परिब्रह्म तो एक बोलिये, तत्व तो पांच बोलिये, आप तत्व तो सफेद बोलिये, पृथ्वी तत्व तो पीला बोलिये, वायु तत्व तो हरिया बोलिये, तेज तत्व तो लाल बोलिये, आकाश तत्व तो श्याम बोलिये, मिट्टी तो पांच बोलिये, आप तत्व में सफेद मिट्टी बोलिये, पृथ्वी तत्व में पीली मिट्टी बोलिये, वायु तत्व में हरी मिट्टी बोलिये, तेज तत्व में लाल मिट्टी बोलिये, आकाश तत्व में श्याम मिट्टी बोलिये, मिट्टी तो पांच सम्पूर्ण बोलिये, धातु तो पांच बोलिये, आप तत्व में सफेद रंग चांदी बोलिये, पृथ्वी तत्व में पीला रंग कंचन बोलिये, वायु तत्व में हरा रंग रांगा सीसा जसद बोलिये, तेज तत्व में लाल रंग तांबा बोलिये, आकाश तत्व में श्याम रंग लोहा बोलिये, धातु तो पांच सम्पूर्ण बोलिये, गर्भ आकार तो एक बोलिये, आरब तो दो बोलिये, एक तो लील बोलिये, एक तो अलील बोलिये, लील तो जड़ में बोलिये, अलील तो चेतन में बोलिये, चेतन की दो खाण बोलिये, एक तो इंड खाण बोलिये, एक तो जर खाण बोलिये, लील तरवर की जड़ खाण बोलिये, खाण तो तीन बोलिये, आरब तो दो बोलिये, गर्भ आकार तो एक बोलिये, तरवरां का रंग बोलिये, आप तत्व में सफेद रंग रुई बोलिये, पृथ्वी तत्व में पीला रंग केसर हल्दी बोलिये, वायु तत्व में हरा रंग पान बोलिये, तेज तत्व में लाल रंग कसुंबा मेहंदी बोलिये, आकाश तत्व में श्याम रंग गली का बोलिये, पांच रंग तरवरां का सम्पूर्ण बोलिये, पांच मिट्टी की चेतन आत्मा बोलिये,

आप तत्व में सफेद रंग हाड़ बोलिये, पृथ्वी तत्व में पीला रंग ख्रालड़ी बोलिये, वायु तत्व में हरा रंग नाड़ी बोलिये, तेज तत्व में लाल रंग ख्रून बोलिये, आकाश तत्व में श्याम रंग मस्तक का बोलिये, पांच मिट्टी की चेतन आत्मा बोलिये, सर्व का मूल बीज तो जल, अगन और पवन बोलिये, बीजग से करके लख्र चौरासी जीवाजून का चेतन कुल प्रगट हुआ, बीजग से करके अठारह करोड़ वनस्पति का कुल प्रगट हुआ, बीजग से कुल हुआ, बीजग नहीं तो कुल भी नहीं, बीजग तो अमर है, विस्तार तो बीजग का है, शरीर तो कच्चा है, पवन तो साख्र है, लख्र चौरासी जीवाजून में बड़ा कुल मानव का बोलिये, ज्यां में तीन पुरुष महा क्रांतिवान प्रगट हुए, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ज्यांकी माता तो सागरीजी बोलिये, पिता तो ओमकारजी बोलिये, तीन पुरुष के तीन जोग महासति बोलिये, ब्रह्माजी के सावित्रीजी महासति बोलिये, विष्णुजी के लक्ष्मीजी महासति बोलिये, शिवजी के गौरा पार्वतीजी महासति बोलिये, कला तो अकल बोलिये, नाम तो अमर बोलिये, शरीर तो कच्चा बोलिये, पाठ तो पृथ्वी का बोलिये, ज्योत तो अख्रण्ड बोलिये, धर्म तो सत बोलिये, देख्रत जो ज्ञान बोलिये, गुप्त जो चोरी बोलिये, ऐता पृथ्वी पाठ आरब लीला का प्रसंग संपूर्ण भया, श्री अनोपस्वामीजी के चरण में सोनी हरिचन्द भाख्या श्री नकलंग अवतार साख्या ।

राग मलार सुरतारो भजन-१

सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया, पहेला चालंती चाल कुचाल ।
सुरता रंग तो करती पण रमज नहीं, तुं तो रम झम खेलंती ख्याल ।।
सुरता वर तो पायो ए सुरता सुन्दरी ।। टेर ।।

सुरता चरणा पेरिया ओ थे तो शोभता, थांरी नेतर दरशे ओ लाल । (२)
सुरता दर्पण जोएलो दीदार में, पछे नेणों में काजल घाल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

वारी सुरता चाल चाले ओ हंसा तणी, तूं तो बोले है कोयल सवाल । (२)
सुरता ब्रह्म रिझावण चालियां, थारां पावों में नेवर घाल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

वारी सुरता सुतों रा कंत चेताविया, जागो ज्योति सरुप जलाल । (२)
देवा कलंक उतारो कुआरी तणों, मैं तो हाजिर ऊभी हूं हाल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

सुरता ब्रह्म सुरत दोए भेला हुआ, वटे पहेरी वचनांरी वरमाल । (२)
सुरता शशी और भांण दोनों साखियां, लागो त्रवणी ऊपर ताल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

सुरता सोवन शिखर तो सवरी रची, वटे बाजे है मरदंग ताल । (२)
सुरता लोचन करीओ वदावणां, वटे भर-भर मोतियो रों थाल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

वारी सुरता मन तो जोषी ओ मंतर भणे, वटे लीदो हथलेवो ओ झाल । (२)
सुरता परणे आया ओ सुन महल में, ज्यांरे झिल-मिल जले ओ मसाल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

वारी सुरता आप अनोप लगन दिया, म्हाने सुन में बताई ओ चाल । (२)
सुरता सोनी ओ हरिचन्द रंग रमे, जटे खेलाया लाल गुलाल ।। (२)
सुरता ब्रह्म पती ओ पूरा सेविया.....

राग मलार भाटी भजन-२

सखीए पीये प्याला ओ कंथजी, थे तो पाया है दे दे ओ रंग ।
सखीए आप अधर रंग रम रही, थांरा मन मांय बहोत निशंख ।।
सखीए पति ही रिझायो है पदमणी ।। टेर ।।

वारी सखीए नाभी भीतर में भट्टी जले, ज्यां में रचीया है पांचों ही रंग । (२)
सखीए चेती अगन भट्टी ऊकळे, ज्यां में जोएलो जंतर को ओ रंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

सखीए सुखमण धार प्यालो भरे, ज्यां में जोयलो अमी ओ रस रंग । (२)
सखीए लिया प्याला ओ प्रेम से, पायो आप तत्व सद रंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

सखीए मिठरस फिका ओ चरपरा, एतो खटरस खाराओ रंग । (२)
सखीए पांचों प्याला ओ भर लिया, दूजो पायो केसरियो ओ रंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

सखीए उरद प्यालो अदर लियो, तीजो हरियो हरी ओ रस रंग । (२)
सखीए अगर आसण पर आविया, वटे चौथो प्यालो सुरंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

सखीए श्याम प्यालो शिखर चढ़े, ज्यां में अगम असमाना ओ रंग । (२)
सखीए ब्रह्मसुरत दोय भेला पिए, ज्यांरे रोज-रोज लागे ओ रंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

सखीए मतवालो मांडियो महल में, ज्यांरे चढ़ीयो सवायो ओ रंग । (२)
सखीए अणबे वाजा ओ ज्यांरे वाजीया, परची पांच ज्योत पचरंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

सखीए आप अनोप उलट पिया, ज्यांरे वंकनाल रस रंग । (२)
सखीए सोनी ओ हरिचन्द भर पीया, ज्यांरे आद अथंग जल रंग ।। (२)
सखीए पीये प्याला ओ कंथजी.....

राग मलार नाटक भजन-३

देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे, ज्यां में देख नुरत को ओ रंग ।
देवा सुरत नाटक मांही रम रही, जणे फूल पहरियाओ पचरंग ।।
सुरता रंग से रिझायो है राजवी ।। टेर ।।

देवा नाटक देखण चाली सुरत को, जणे वश कीना मन ओ तुरंग । (२)
देवा कर असवारी ओ समरिया, दोनों गणपत ओ बजरंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

देवा नव सौ चिराग ओ संग में, ज्यांरे झलमल जोत झरंग । (२)
देवा ताल मृदंग बाजे बंसरी, गहरी घोर पड़े ओ घणी रंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

देवा शंख पखावल बज रह्या, बाजे घड़ियाला डेरु डरंग । (२)
देवा सरस्वती वचनों को सिद्ध करे, आगे अणबे गजल गावे रंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

देवा निर्भय नकीम पुकारिया, वटे त्रवणी चढ़ायो तुरंग । (२)
देवा सुखमण सैज बिछाविया, ज्यांरे फरकत नेजा फरंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

देवा ब्रह्मा नाटक पर रीझीया, सुरता गावे राग मद रंग । (२)
देवा सुरत ब्रह्माजी को मोहे लिया, ज्यांरे लिपट रही ओ लग रंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

देवा अधर दली से आसन किया, ज्यांरे नित-नित खेले ओ रंग । (२)
देवा सुन में रचाई है रोशनी, ज्यांरे आठ पहोर ऊसरंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

देवा अनोपदास गुरु भेटिया, ज्यांरे शील सरुपी ओ रंग । (२)
देवा सोनी ओ हरिचन्द सत भणे, वटे रंग सूं मिलाया ओ रंग ।। (२)
देवा उलट नाभी ओ चढ़ी वंक पे .....

राग मलार आरती भजन-४

सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी ओ, वटे नवखंड नाम निशंक ।
सखीए अधर उतारे ओ आरती, सेवा सुन्दर नार निशंक ।।
सखीए निर्भय नौपत वटे बज रही ।। टेर ।।

सखीए चार जोताओ दरसे निरमली ओ, ज्यांरे निरंजन देव निशंक । (२)
सखीए प्रेम पिताम्बर पहरिया ओ, करती निज मन सेव निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

सखीए आप तत्व जल आरती ओ, गंगा शीश चढ़ाई निशंक । (२)
सखीए पृथ्वी कंचन सेवा शुभ चढ़े ओ, अंगा केसर मुगट निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

सखीए वायु तत्व हरि आरती ओ, दम निर्गुण स्वास निशंक । (२)
सखीए तेज सुरख जोतां जल रही ओ, खेवे निरंजन पाठ निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

सखीए श्याम तत्व सुख आरती ओ, जागो सुखमण नाड़ निशंक । (२)
सखीए घण-घण घंटा ओ वटे बज रहा, सुरती तार मिलाया निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

सखीए वेगम नगरी ओ वटे बस रही ओ, ज्यांरे ज्योति सरुप निशंक । (२)
सखीए हरदम सेवा ओ सुरत करे, ज्यांरे निर्गुण रुप निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

सखीए वेगमपुरी ओ बाजे बंसरी, गावे निर्वाणी पद निशंक । (२)
सखीए पांच सम्पूरण आरती ओ, पद परवाणी निर्भय निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

सखीए आप अनोप जप तप किया ओ, ज्यांरा नकलंग नाम निशंक । (२)
सखीए सोनी हरिचन्द करे आरती ओ, माला रट-रट राम निशंक ।। (२)
सखीए शिखर चढ़ी ओ सुरता सुन्दरी.....

भजन आरोधी प्रमाण राग सारंग-१

आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ जी, अबे मोरी वार करो नकलंग देवा ओ राज ।
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी ।। टेर ।।

वारी प्रथम देव, गणपतीजी पुजू ओ ओ जी, वारी सरस्वत चरण तुम्हारी ओ राज । (२)
कलजुग जाल, कालींगो वरते ओ ओ जी, जणे समझ घटाई सारी ओ राज ।। (२)
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी.....

वारी आतम खोज, अलखजी ने ध्यावो ओ ओ जी, म्हारा नकलंग नेजा धारी ओ राज । (२)
राक्षसे रोळ, जगत मांही मांडी ओ ओ जी, आतो दुनिया तरसे है सारी ओ राज ।। (२)
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी.....

वारी होमे ओ प्राण, धरण जद धूजे ओ ओ जी, एतो आतम कुण उदारी ओ राज । (२)
गुपतीए घात, घरोघर मांड़ी ओ ओ जी, एतो राक्षस फरे है शिकारी ओ राज ।। (२)
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी.....

वारी शशी और भांण, ज्योत में झांका ओ ओ जी, ए तो तीसुई ग्रहण तैयारी ओ राज । (२)
परदे ओ जादू, जाल चलाया ओ ओ जी, एतो बालक जणे है कुआरी ओ राज ।। (२)
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी.....

वारी भोजनरी भूख, भोजन सुंई भागे ओ ओ जी, ए तो आतम अन्न का आहारी ओ राज । (२)
दरख्त गायो, वेरी ओ वाढ़ण लागा ओ ओ जी, आतो सुखे अलख थांरी वाड़ी ओ राज ।। (२)
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी.....

वारी आप अनोप, अखंडजी ने धाया ओ ओ जी, ज्यांने जुग तारण वात विचारी ओ राज । (२)
सोनी ओ हरिचन्द, दुरबल दाखे ओ ओ जी, म्हारा नकलंगजी री बलिहारी ओ राज ।। (२)
आप अलखजी, सकल मांय सेवा ओ ओ जी.....

भजन आरोधी प्रमाण राग सारंग-२

नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ ओ जी, ओ तो राक्षस खेल खपावो ओ राज ।
नकलंग देव, अलख वारु आवो ओ जी । (टेर)

वारी सतजुग आद, सदा ही सुख होता ओ ओ जी, अबे जगत जाल मांहि पड़िया ओ राज । (२)
दान पति, दाता ओ नहीं दरसे ओ ओ जी, ऐतो जगत जादु से ही गलिया ओ राज ।। (२)
नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ जी..... (टेर)

वारी रियासत राजा, रंगदारी में रहता ओ ओ जी, अबे देव ठिकाणा तो ठरिया ओ राज । (२)
सुध-बुध लक्ष्मी, लार नही दरसे ओ ओ जी, ऐ तो भुला कुटुम्ब वारी कीरीया ओ राज ।। (२)
नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ जी..... (टेर)

वारी हर सुं तो हेत, हिरदा मांहि होता ओ ओ जी, ऐ तो दारु से दीन बिगड़िया ओ राज । (२)
सुन्दर नार सति, नहीं दरसे ओ ओ जी, ऐ तो भूत भीतर मांहि भरीया ओ राज ।। (२)
नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ जी..... (टेर)

वारी माणक रतन, हीरा हद होता ओ ओ जी, अबे कांच कपाटां में जड़िया ओ राज । (२)
शशी और भाण, दीपक नाही दरसे ओ ओ जी, ऐ तो अंधारे जाए ने अड़ीया ओ राज ।। (२)
नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ जी..... (टेर)

वारी अन्न फल मेवा, दूध रस पीता ओ ओ जी, अबे मन तो मांस मांही धरीया ओ राज । (२)
दिल मांही दान, दया नही दरसे ओ ओ जी, ऐ तो नरक पावड़िये चढ़िया ओ राज ।। (२)
नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ जी..... (टेर)

वारी आप अनोप, अंतरगढ़ जोया ओ ओ जी, जणे अमर काम तो आदरीया ओ राज । (२)
सोनी ओ हरिचन्द, सतगुरु शरणे ओ ओ जी, अबे मुलकां में नाम वापरिया ओ राज ।। (२)
नकलंग राव, अलख वारु आवो ओ जी..... (टेर)

भजन आरोधी प्रमाण राग सारंग-३

जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी, आ तो आतम जून उदारो ओ राज ।।
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी ।। टेर ।।

वारी गाज ओ वीज, वावल नहीं होता ओ ओ जी, अणे दुश्मने दरद वधाया ओ राज ।। (२)
वेरी ओ वात, मालिक नामें दाखे ओ ओ जी, अणे वासा काल लगाया ओ राज ।। (२)
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी.....

वारी मंतर सीकी, टीपणा नहीं होता ओ ओ जी, अणे हर माथे हुकम हलाया ओ राज ।। (२)
मंतर थम्ब, दूगठिया दाखे ओ ओ जी, अणे भदरा भरम मिलाया ओ राज ।। (२)
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी.....

वारी जहेरी ओ जून, सरप नहीं होता ओ ओ जी, अणे अदबुद रोग चलाया ओ राज ।। (२)
ब्राह्मण भणे, भेद नहीं भाखे ओ ओ जी, अणे हेतां सूं कपट हलाया ओ राज ।। (२)
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी.....

वारी राक्षस राहू, केतु नहीं होता ओ ओ जी, अणे गुपतीए ग्रह तो लगाया ओ राज ।। (२)
उपज खपज, रास माथे दाखे ओ ओ जी, अणे जगत झूठ कर खाया ओ राज ।। (२)
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी.....

वारी सकरां तो दिशा, सूल नहीं होता ओ ओ जी, अणे जोगण दूत हलाया ओ राज ।। (२)
राक्षस कुली, राम नहीं दाखे ओ ओ जी, अणे घरोघर काट घलाया ओ राज ।। (२)
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी.....

वारी आप अनोप, धरण गुण धाया ओ ओ जी, जणे जोए-जोए जुग समझाया ओ राज ।। (२)
सोनी ओ हरिचन्द, दूरस कर दाखे ओ ओ जी, जणे देव दरशण गुण पाया ओ राज ।। (२)
जगत तारण धणी, आप पधारो ओ ओ जी.....

भजन आरोधी प्रमाण राग सारंग-४

आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी, मोर मुगट सिर धारी ओ राज ।
नकलंग देव, करो असवारी ओ ओ जी ।। टेर ।।

वारी नकलंग देव, निरंजन पूजु ओ ओ जी, वारी आतम अरज सुणीजे ओ राज । (२)
असुरांरो अमल, मुलक मांय वेगो ओ ओ जी, अबे वसती री वार करीजे ओ राज ।। (२)
आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी.....

संत समरणा, सत सूंही फेरे ओ ओ जी, ओ तो जगत धणी सूं धीजे ओ राज । (२)
जोगी रो जोग, भोग से भागों ओ ओ जी, ओ तो रोळ मसखरी में रीझे ओ राज ।। (२)
आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी.....

राक्षसे बारा, पंथ चलाया ओ ओ जी, ए तो बरतन मांहि वटलीजे ओ राज । (२)
वरण चौरासी, जुमला में जीमे ओ ओ जी, ए तो भेला बैठ भगतीजे ओ राज ।। (२)
आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी.....

वारी जोग वेरागी, जल मांही झीले ओ ओ जी, ए तो कतको सूंही कूटीजे ओ राज । (२)
भरमाणों भेख, भेद वना भटके ओ ओ जी, ऐ तो लखणो सुंही लुटीजे ओ राज ।। (२)
आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी.....

वारी खान राजेश्वर, खड़ग संभालों ओ ओ जी, थांरी लक्ष्मी रो खेत लूटीजे ओ राज । (२)
शस्त्र धार, खड़क हाथे झालो ओ ओ जी, पछे असुरों पे उड़ीजे ओ राज ।। (२)
आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी.....

वारी आप अनोप, सरबंग मांहि सजीआ ओ ओ जी, ऐ तो जाल मांहि झपटीजे ओ राज । (२)
सोनी ओ हरिचन्द, करे है विनंतियां ओ ओ जी, ऐ तो धणी तो धरम सुं रीझे ओ राज ।। (२)
आलम राज, करो असवारी ओ ओ जी.....

राग सारंग आगम प्रमाण भजन-१

वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो,(२) आदू सतजुग आवे ओ ओ जी ।
वारीओ बीज वदलियोरा मानवी,(२) ज्यांने कलजुग भावे ओ ओ जी ।।
वारीओ वेरी ओ मारण साहिबो,(२) बाबो नकलंग आवे ओ ओ जी ।। टेर ।।

वारीओ समरु ओ गणपति राजवी,(२) सरस्वती सहाय करीजे ओ ओ जी ।
वारीओ जगत तारण री है वारता,(२) आदु अरज सुणीजे ओ ओ जी ।।
वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो.....

वारीओ सुख्र दुख्र राजाओ पूछेला,(२) हासल हक रो घालीजे ओ ओ जी ।
वारीओ लख्रतो चौरासी ओ जून री,(२) पाछी परथा पालीजे ओ ओ जी ।।
वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो.....

वारीओ दूध देवे सोई पदमणी,(२) ज्योकूं नमन करीजे ओ ओ जी ।
वारीओ लीला लहेर जद होवसी,(२) लेके भोग भरीजे ओ ओ जी ।।
वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो.....

वारीओ धरम धजा ओ घर-घर बांधसी,(२) हरसुं हाथ जोड़ीजे ओ ओ जी ।
वारीओ वीसा पंथी ओ भोगी बगड़िया,(२) ताको पंथ तोड़ीजे ओ ओ जी ।।
वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो.....

वारीओ जुग में बगड़ेला ओ राक्षसी,(२) ज्यांरे वाट देरीजे ओ ओ जी ।
वारीओ तीर्थांगर पंथ ओ टूटसी,(२) नकलंग आण फेरीजे ओ ओ जी ।।
वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो.....

वारीओ आप अनोप अलख्र धणी,(२) चरणे शीश नमाईजे ओ ओ जी ।
वारीओ सोनी हरिचन्द करे वीणती,(२) सत री भगती कमाईजे ओ ओ जी ।।
वारीओ सतीयां थे सत मत छोड़जो.....

राग सारंग आगम प्रमाण भजन-२

वारीओ सुणजो सतजुग री ओ वारता,(२) वरसो लाख जीवंता ओ ओ जी ।
जदी अन्न फल मेवा बोळी उतपती,(२) अमरत दूध पीवंता ओ ओ जी ।।
जदी दानव दुरगों में आवता,(२) आतम तुरंत तोडंता ओ ओ जी ।। टेर ।।

वारीओ धरणी माता तो आदु धणी,(२) ज्यों में देव दीवाणा ओ ओ जी ।
एतो श्याम तत्व में प्रगट हुआ,(२) सो घर काल केवाणा ओ ओ जी ।।
वारीओ सुणजो सतजुग री वारता.....

वारिओ देव दानवों माथे कोपिया,(२) शस्त्र धनुष धारोणा ओ ओ जी ।
पछे जमड़ा रे साथे युद्ध किया,(२) दानव दूत मारोणा ओ ओ जी ।।
वारीओ सुणजो सतजुग री वारता.....

पछे ब्रह्माजी भेद विचारिया,(२) धर्म वेद धारोणा ओ ओ जी ।
जदी रेण पड़िये राक्षस आवता,(२) सतरा वेद चोरोणा ओ ओ जी ।।
वारीओ सुणजो सतजुग री वारता.....

पछे ब्रह्मा देव समापत हुआ,(२) वंठा वेद वंचोणा ओ ओ जी ।
जदी परदे ओ पाप चलाविया,(२) जदी जादू रचाणा ओ ओ जी ।।
वारीओ सुणजो सतजुग री वारता.....

पैली दूर्गा जादू तो प्रगट किया,(२) साथे होम हलोणा ओ ओ जी ।
जदी राक्षसे रोग चलाविया,(२) कलजुग नाम देरोणा ओ ओ जी ।।
वारीओ सुणजो सतजुग री वारता.....

वारीओ आप अनोप अंतर ध्यानी,(२) चौड़े चोर लेरोणा ओ ओ जी ।
वारीओ सोनी हरिचन्द दीपक जोविया,(२) हिरदे चोर हेरोणा ओ ओ जी ।।
वारीओ सुणजो सतजुग री वारता.....

राग सारंग आगम प्रमाण भजन-३

वारीओ पारस पृथ्वी को जाणसी,(२) सो नर देश दीवाणा ओ ओ जी ।
वारीओ पूरा सतगुरु ज्योंने भेटिया,(२) अमर नाम लेवाणा ओ ओ जी ।।
वारीओ मदमाटी राक्षस भरखता,(२) सो घर नरक केवाणा ओ जी जी ।। टेर ।।

वारीओ आदू जरणी तो अमर पती,(२) ज्यां में ज्योत प्रकाशा ओ ओ जी ।
वारीओ धरम किया सुं धरणी तरे,(२) ज्यां में जुग सुख वासा ओ ओ जी ।।
वारीओ पारस पृथ्वी कुं जाणसी.....

वारीओ धरणी थाकी पूरा पाप सूं,(२) राक्षस करे है रणवासा ओ ओ जी ।
वारीओ राम कला रंग चेतसी,(२) होसी तुरंत तपासा ओ ओ जी ।।
वारीओ पारस पृथ्वी कुं जाणसी.....

वारीओ छत्रपति ओ सब चेतसी,(२) चेती खान खवासा ओ ओ जी ।
वारीओ सुरा ओ शस्त्र बांधसी,(२) आवी मुल्कों में वासा ओ ओ जी ।।
वारीओ पारस पृथ्वी कुं जांणसी.....

वारीओ नकलंग दल तो चढ़ावसी,(२) दल में पदम पचासा ओ ओ जी ।
जदी दानव देरासर टूटसी,(२) टूटी जमों रा रंग रासा ओ ओ जी ।।
वारीओ पारस पृथ्वी कुं जाणसी.....

वारीओ करतब नगरी ओ टूटसी,(२) राक्षस मार खुलासा ओ ओ जी ।
जदी जवर कंचन लक्ष्मी लावसी,(२) घर घर ज्योत प्रकाशा ओ ओ जी ।।
वारीओ पारस पृथ्वी कुं जाणसी.....

वारीओ आप अनोप अमर होसी,(२) ज्यारी जुगो जुग आशा ओ ओ जी ।
वारीओ सोनी हरिचन्द दुर्बल दाखवे,(२) ज्यांरा अमरापुर वासा ओ ओ जी ।।
वारीओ पारस पृथ्वी कुं जाणसी.....

राग सारंग आगम प्रमाण भजन-४

वारीओ मुलको में मादल वाजसी,(२) सतियां करसी सामेळा ओ ओ जी ।
वारीओ देव कला दिल में जाणजो,(२) रहेजो भाव सूं भेला ओ ओ जी ।।
जदी नकलंग न्याय तपावसी,(२) होसी तुरंत निवेड़ा ओ ओ जी ।। टेर ।।

वारीओ सातों दीपों में सदर धणी,(२) नव खंड नाम निशानी ओ ओ जी ।
वारीओ चारों खूंटो में छत्रपति,(२) नकलंग नाम पहेचाणी ओ ओ जी ।।
वारीओ मुलको में मादल वाजसी.....

वारीओ धरम वेद दूजा धारसी,(२) नकलंग वेद वखाणी ओ ओ जी ।
वारीओ देव कला ओ जदी दरसेला,(२) सतजुग री सेलाणी ओ ओ जी ।।
वारीओ मुलको में मादल वाजसी.....

वारीओ रोग घटी ओ सुख उपजी,(२) होसी दरिद्र री होणी ओ ओ जी ।
आतो सुध-बुध वस्ती में वापरी,(२) परजा फिरसी फूलोणी ओ ओ जी ।।
वारीओ मुलको में मादल वाजसी.....

वारीओ कडुआ सायर मीठा होवसी,(२) चढ़सी नाम निरवाणी ओ ओ जी ।
वारीओ चंद्र कला ओ तीसूंई ऊगसी,(२) पूरी वात परवाणी ओ ओ जी ।।
वारीओ मुलको में मादल वाजसी.....

वारीओ नकलंग भक्ति ओ चालसी,(२) रमसी देव दीवाणी ओ ओ जी ।
ऐतो सत रा ओ मंगल गावसी,(२) गावी परजा पटराणी ओ ओ जी ।।
वारीओ मुलको में मादल वाजसी.....

वारीओ आप अनोप जनम लियो,(२) जुग में ज्योत जगोणी ओ ओ जी ।
वारीओ सोनी हरिचन्द नकलंग भेटिया,(२) सतजुग भक्ति छपोणी ओ ओ जी ।।
वारीओ मुलको में मादल वाजसी.....

राग तेलंग कामोद भजन वाणी-१

वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई,
सब गुणपती सरट उपाई जी ।। टेर ।। (२)

वारीओ सब गुण गुणपती धरणीओ मांय, भेद पाया ओ जद भगती उपाई जी ।। (२)
वारीओ रोम-रोम मांही अमरत वरसे, आद गुणो रो पति कोई एक परसे जी ।। (२)
वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई.....

वारीओ करणी से ज्योत, ज्योत मांय करणी, अखंड कुंआरी जगत की ओ जरणी जी ।। (२)
वारी जरणी रा गुण से सरब गुण व्यापे, भूलोड़ा जोगी अगन धूणी तापे जी ।। (२)
वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई.....

वारीओ एक गुणपतजी खातण ओदर आया, दूजा गुणपतजी पार्वतीजी जाया जी ।। (२)
वारीओ तीजा गुणपतजी अपरम पारा, रचना रची ओ ज्यांरे दस-दस द्वारा जी ।। (२)
वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई.....

वारीओ भरम भरम से आ परजा ओ भूली, तोड़े पत्थर ने बणावत ढूली जी ।। (२)
वारीओ ज्यांने तो गुरुगम कणवद आवे, आद गुणो रो पति अन्न जल लावे जी ।। (२)
वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई.....

वारीओ तुरका हिन्दुओं धणी दोनो ठेराया, मालिक एक मरम नहीं पाया जी ।। (२)
वारीओ मुसलमान हिन्दू एकण द्वारा, गऊ माटी खाणे से दरसत न्यारा जी ।। (२)
वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई.....

वारीओ आप अनोप सरब गुण जाणी, पृथ्वी पति ओ हरीगुण वेद लखाणी जी ।। (२)
वारीओ सोनीओ हरिचन्द दुर्बल दाखे, आद अलखजी रा हरिगुण भाखे जी ।। (२)
वारीओ कुदरत कला समर मेरा भाई.....

राग तेलंग कामोद भजन वाणी-२

वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण थाय,
गावे मंगल सुमरे स्वास उसासाजी ।। टेर ।। (२)

वारीओ सरस्वती समरु ओ स्वराणी मांय, पृथ्वी द्वारा ओ मांजी मुखमंडल वासा जी ।। (२)
वारीओ ब्रह्मा ओ विष्णु शिवशंकर धाए, आद जुगाद जरणी थांरी आशा जी ।। (२)
वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण.....

वारीओ जागत अणबे अरथ आतम मांय, भजन विचारा राखो विश्वासा जी ।। (२)
वारीओ पारस परदे, मणी ओ मंडप मांय, देव दर्शन ज्यां अखंड उजासा जी ।। (२)
वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण.....

वारीओ अला ओ पिंगला सती ओ सुखमण राय, आद धणी ज्यांसु करलो उरदासा जी ।। (२)
वारीओ नूरत तेज मांय सूरती समाय, अलक आरोदे सोई रहे अपवासा जी ।। (२)
वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण.....

वारीओ नासा नैणा रे बिचे तंत मिलाय, त्रवणी महेल मांय करलो तपासा जी ।। (२)
वारीओ शशी और भाण धारा दोए दरसाय, संत सुरा वठे करत कैलाशा जी ।। (२)
वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण.....

वारीओ गगन मंडल घेरी घोर सुणाय, नटवर स्वामी ज्यां ज्योत प्रकाशा जी ।। (२)
वारीओ देश दीवाणा कोई उलट समाय, संत सबागी चढ़िया कर कर उमासा जी ।। (२)
वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण.....

वारीओ आप अनोप देव गुण पाय, समझ बताई गुरु करली बरदासा जी ।। (२)
वारीओ सोनी हरिचन्द ज्यांरा मंगल गाय, नाम दिया ओ धणी नरभे निवासा जी ।। (२)
वारीओ जोग जगत ज्यांकू परसण.....

राग तेलंग कामोद भजन वाणी-३

वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओळखाणी,
परदे में गुण परगट रणुकारा जी ।। टेर ।। (२)

वारीओ आद ओ अंत धरण अंबर मांय, भीतर बाहर दम का करलो विचारा जी । (२)
वारीओ जरणी री ज्योत में जगत समाया, अलख बूंद ज्योरा सकल पसारा जी ।। (२)
वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओलखाणी.....

वारीओ नाभी कमल मांय वायु समाय, जल का ओ बंद अगन करती आरा जी । (२)
वारीओ पांच तत्व गुण तीनोई मांय, ज्यांरे बीचे चेतन अलख सेजारा जी ।। (२)
वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओलखाणी.....

वारीओ दस द्वार कर सर थंब बणाया, अजब रुप धरिया अधर आकारा जी । (२)
वारीओ पांच मिट्टी पांचुई रंग मिलाया, ज्यां में चेतन स्वामी करत पुकारा जी ।। (२)
वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओलखाणी.....

वारीओ शशी और नाड़ी नरवर भांण उपाया, कुदरत एक बरतन दोनूं न्यारा जी । (२)
वारीओ भजन विचारी कोई मारम पाया, ज्ञान ध्यान ज्यांरे समझ आसारा जी ।। (२)
वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओलखाणी.....

वारीओ मेरु शिखर मांय तेज सवाया, जण घर भंवरा करत गुंजारा जी । (२)
वारीओ ब्रह्म ज्ञान से अगम घर पाया, अरबी वाजा सोई अलख अखाड़ा जी ।। (२)
वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओलखाणी.....

वारीओ आप अनोप नकलंग पद पाया, अवरां तारण स्वामी आतम उदारा जी । (२)
वारीओ सोनी हरिचन्द ज्यांकु शीश नमाया, सतगुरु स्वामीजी मांरा करजो निरधारा जी ।। (२)
वारीओ आद धणीरी संतो करलो ओलखाणी.....

राग तेलंग कामोद भजन वाणी-४

वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो,
कूंची अकलरी आतम मांय जोए लो जी जी ।। टेर ।। (२)

वारीओ समझ आई ओ जद सतगुरुजी पाया, आद गुरुजी म्होने अगम बताया जी । (२)
वारी आदु तो करणी कठिन म्हारा वीरा, स्वर्ग जोया ओ ज्यांरा नाम फकीरा जी ।। (२)
वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो.....

वारीओ पांचु इन्द्रियां जासा ओ बंदण दीजे, पांच तत्व गुण पवन संग लीजे जी । (२)
पछे आसण पदम चढ़ावो म्हारा वीरा, शिखर चढ़े ओ ज्यांरा नाम फकीरा जी ।। (२)
वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो.....

वारीओ नाभी नेणा ओ नासा तीर गुण जोणा, मन मांय मोती पवन सुंई पोणा जी । (२)
पछे दुर्मति दूर करीजे म्हारा वीरा, हरदम हेरे ज्यांरा नाम फकीरा जी ।। (२)
वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो.....

वारीओ पांच तीन गुण शामिल कीजे, आठोंई उलट अगर पर लीजे जी । (२)
पछे वंकी तो नाल जगाओ म्हारा वीरा, तख्त चढ़िया ओ ज्यांरा नाम फकीरा जी ।। (२)
वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो.....

वारीओ वेगम नगरी में वणज सवाया, नगर गया सोई निज मोती लाया जी । (२)
वठे वदका तो वणज करीजे म्हारा वीरा, फिकर मेटे ओ ज्यांरा नाम फकीरा जी ।। (२)
वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो.....

वारी आप अनोप सरब गुण सीधा, उलट अमी ओ रस भर-भर पीधा जी । (२)
वारीओ सोनी हरिचन्द कहवे सुन मन वीरा, रहेणी रेवे ज्यांरा नाम फकीरा जी ।। (२)
वारीओ स्वर्ग लोकरी थे खड़की पण खोलो.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-१

वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई,
ज्यांरी अमर कला ओ जरणी जाणिये हे, हे ।
रिजक जग में पूरवे भाई ।। टेर ।।

सरसत परसण देव दरसण, स्वास में सोमकार हो । (२)
गुणपत देवा सफल सेवा, आदगुण ॐकार ओ ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

गम कर हीरदे हेरलो, परगट अंबर गाज ओ । (२)
गुणपत परगट दरसीया, ज्यां तत्व गुण को राज ओ ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

तत्व गुण तरवर हरि गुण, जगत पालण जग धणी । (२)
गुणपत धरणी पार अपरम, सरब सिद्धि बहुघणी ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

वारी ज्ञान ध्यान प्रताप गुण को, गुण लाया गुणपती । (२)
सरट को फल नित देवे, जगत जरणी महासती ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

पांणी पृथ्वी बैल अन्न रुई, भैंस गउ भेड़ी ऊँट अज्या । (२)
गेंद तुरंगा तरु रासबी, रतन चवदेई गुण सजीया ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

क्रोड तैतीस देव निरमल, हुआ देवत गुण रटे । (२)
पृथ्वी ओ गुणपति आद से, ज्या रतन चवदेई जो अटे ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

अनोपस्वामी गुण ही गुण का, किया जग में वेद धारण । (२)
सोनी हरिचन्द रटे गुणपत, आया स्वामी जुग तारण ।। (२)
वारी गुण को रटो तो गुणपती ओलखो भाई.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-२

वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई,
वारीओ भरत खंड रा ओ राजवी हे, हे ।
नकलंग देव आविया भाई ।। टेर ।।

पृथ्वी ओ पालण आद से, अणबोला बोला जीव ओ । (२)
वारी हेलो देवे आतमा, पधारो नकलंग पीव ओ ।। (२)
वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई.....

नकलंग राक्षसों कूं मारसी, दूजांरी करसी पाल ओ । (२)
सतजुग आवी झूलता, भागे ओ जासी काल ओ ।। (२)
वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई.....

जगत आवी जात्रा, लेले फूलोंरी साब ओ । (२)
धणीओ री करसी आरती, वे लेसी दूणा लाभ ओ ।। (२)
वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई.....

रंग सूई राजा आवसी, नकलंग करसी न्याय ओ । (२)
मारेला गुप्ती गामड़ा, चारों जुगों रो दाव ओ ।। (२)
वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई.....

दल में दीपक जोड़सी, तसकरां संदो तेल ओ । (२)
गुपतीयो रे घेरो घालसी, नकलंग करसी खेल ओ ।। (२)
वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई.....

अनोपस्वामी आविया, काढ़ी सरठरी सोत ओ । (२)
सोनी ओ हरिचन्द यूं भणे, जागी है जुग में ज्योत ओ ।। (२)
वारी सरठ तारण स्वामी आवीया भाई.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-३

वारी आद अलख धणी ओलखो भाई,
ज्यांरे देव दरसण दिल में दरसीया हे, हे ।
अलख स्वामी आवीया भाई ।। टेर ।।

आद धरणी अगम अंबर, भांण शशी और सुर चले । (२)
तारा मंडल तेज निरमल, सरठ में स्वामी मिले ।। (२)
वारी आद अलख धणी ओलखो भाई.....

सरठ सिक्का श्याम रा, नकलंग नामा चालसी । (२)
भजन रो परताप भारी, मुलक माला झालसी ।। (२)
वारी आद अलख धणी ओलखो भाई.....

मुलको में मादल वाजसी, घर-घर बांधी माल ओ । (२)
नकलंग चढ़सी न्याय पे, ज्यांरी संत पकड़ी चाल ओ ।। (२)
वारी आद अलख धणी ओलखो भाई.....

काशी ओ पंडित वेद पढ़सी, देव रे दरबार ओ । (२)
वारी खोट काढ़ी खलकरी, चाली धरम उपकार ओ ।। (२)
वारी आद अलख धणी ओलखो भाई.....

सरद गरमी रोग भागी, चाली सुख रा स्वास ओ । (२)
इन्द्र माला घूमसी, बरसेला बारोई मास ओ ।। (२)
वारी आद अलख धणी ओलखो भाई.....

अनोपस्वामी अलख रुपी, अलख रंग में वे रमे । (२)
सोनी हरिचन्द श्याम चरणे, शीश ले चरणा नमे ।। (२)
वारी आद अलख धणी ओलखो भाई.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-४

वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई
ए तो अलख निरंजन जाणीये हे हे ।
ए गुण अवतारी ओलखे भाई ।। टेर ।।

आद धरणी अखंड जरणी, सरब देवा मांय बसे । (२)
वारी जड़ चेतन रुप पचरंग, सरब सिद्धि आ रचे ।। (२)
वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई.....

वारी हाड़ गिरवर मांस माटी, चाबरुं मांय बाहर दरसे । (२)
दीप सपत खंड नव में, कलाधारी कोई एक परसे ।। (२)
वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई.....

वारी नदी नाड़ी ओज दरीआ, माजी मुख से जल भरे । (२)
वारी रोम-रोम अमरत बरसे, जल से सब जुग तरे ।। (२)
वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई.....

वारी सीप सायर रतन गिरवर, सीप में मोती बसे । (२)
वारी ध्यान कर कर खंड देखो, गुण कुदरत जुग रचे ।। (२)
वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई.....

वारी हंस ज्यूं परमहंस ज्ञानी, सरब गुण में वे सजे । (२)
वारी करे करणी देख दरशण, धरम कारण देही तजे ।। (२)
वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई.....

अनोपस्वामी अमर नामी, धरण रा गुण वे लखे । (२)
सोनी हरिचन्द पाया दरशण, न्याय जुग रो कर सके ।। (२)
वारी दिल से लखे सो अलेख देवता भाई.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-५

वारी सोई परत जुग पालसी भाई
ज्यांरे दिल में देव गुण आवसी हे हे ।
गुरुगम गुण गावसी भाई ।। टेर ।।

सतजुग सुखिया आवसी, ज्यांरे नित निरमल नूर ओ । (२)
वारी मन बोळा फूलसी, ज्यांरी दकल भागी दूर ओ ।। (२)
वारी सोई परत जुग पालसी.....

भलाई जागी ब्रह्म में, वे सांच बोली सब जणा । (२)
ज्यांरे ज्ञान घट में उपजी, वे नाम लेसी हरतणा ।। (२)
वारी सोई परत जुग पालसी.....

ऋषि राजा ध्यान करसी, वचन गुरुगम वे चली । (२)
सती सुरा अष्ट देवा, मन शीतल बुध भली ।। (२)
वारी सोई परत जुग पालसी.....

वारी अंतर अणबे चेतसी, सुरसत मांय उगाव ओ । (२)
सेजे समरण वे करी, ज्यांरे भेद से कर भाव ओ ।। (२)
वारी सोई परत जुग पालसी.....

वारी पतिव्रता धरम पाली, पति लक्ष्मी मानसी । (२)
अवतार नामे नमण करसी, हुकम ले ले हालसी ।। (२)
वारी सोई परत जुग पालसी.....

अनोपस्वामी ध्यान कर-कर, सरब गुण का सार लाया । (२)
सोनी हरिचन्द जगत रुपी, अमर प्याला वांई पाया ।। (२)
वारी सोई परत जुग पालसी.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-६

वारी जगत उदारण जागो भाई ।
वारी पृथ्वी पालण महा पद पाविया हे हे ।।
आलम राज आविया भाई ।। टेर ।।

सरस्वत माजी समरीये, सुद बुद दीजो देव ओ । (२)
गुणपतजी महाराज स्वामी, करुं सतमन सेव ओ ।। (२)
वारी जगत उदारण जागो भाई.....

रावण मारीयो राम ज्यां दिन, दुष्ट आया देश ओ । (२)
जुग पर जादू फेरियो, अण पाप रे परवेश ओ ।। (२)
वारी जगत उदारण जागो भाई.....

ब्रह्मा ओ भूला भौम सारी, लिया विक्रम वेद ओ । (२)
राक्षसे राज दबाविया, घर-घर कर दी खेद ओ ।। (२)
वारी जगत उदारण जागो भाई.....

जपीया ओ जोगण वीर जादू, हाथे गरीया होम ओ । (२)
परगट गुपती पाप कर-कर, डबोई सारी भौम ओ ।। (२)
वारी जगत उदारण जागो भाई.....

दानवे दीदो दाव जुग में, राजा पकड़ी मून ओ । (२)
तारण वालो कुण स्वामी, सरब दुखी आ जून ओ ।। (२)
वारी जगत उदारण जागो भाई.....

नकलंग नामे अनोपस्वामी, धरम सतरा पूत ओ । (२)
सोनी हरिचन्द परसीया, ओलखाया दानव दूत ओ ।। (२)
वारी जगत उदारण जागो भाई.....

राग–माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन–७

वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई ।
वारी आगम वेगम रा परीयाण में हे हे ।।
गुरो से गुरु गम गुण पाविया भाई ।। टेर ।।

पृथ्वी ओ परथम देव ज्यां, वद वद रचीया रुप ओ । (२)
ज्यां रो पार देव न पाविया, सब भूप चंदा भूप ओ ।। (२)
वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई.....

जदी नहीं था विक्रम होम जुग में, नहीं था जादू जाप ओ । (२)
देवत करते राज जुग में, धरम रे परताप ओ ।। (२)
वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई.....

पृथ्वी ओ मंडल बीच में, रखते ओ सतजुग चाल ओ । (२)
अमरत मीठा वेण ज्यांरे, धरम संदी ढाल ओ ।। (२)
वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई.....

वारी धरता ओ अंतर ध्यान सुन में, जगत सब जगदीश ओ । (२)
कलाओ आदु जोवते, अंतर गढ़ रे बीच ओ ।। (२)
वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई.....

पृथ्वी ओ मंडल वरसता, इन्दर बारोही मास ओ । (२)
ब्रह्मा ओ विष्णु महेश ज्यांने, लिखी अपरम्पार ओ ।। (२)
वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई.....

नकलंग नामे अनोप म्होय, सतगुरु मलिया श्याम ओ । (२)
सोनी ओ हरिचन्द दाखवे, दिया अमर पद नाम ओ ।। (२)
वारी सुन-सुन पृथ्वी रा हरी गुण ओलखो भाई.....

राग-माड़ पृथ्वी प्रमाण भजन-८

वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई ।
वारीओ कूदरत ज्यां कैलाश में हे, हे ।।
जोग जुगत कर हेरलो भाई ।। टेर ।।

अगन जल वायु तीन गुण में, तत्व गुण प्रकाश ओ । (२)
ज्यांरा ओ आतम रुप ज्यां में, चाले स्वास उसास ओ ।। (२)
वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई.....

मडीयाणा नाभी कमल में, नकसिक नाड़ी देश ओ । (२)
कर सर चालण पांव ज्यां में, नहीं है राया रेस ओ ।। (२)
वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई.....

ज्यांरा संत सुमरण वे करें, दम-दम री दरकार ओ । (२)
सुराओ करसी तोल ज्यांरा, त्रिलोकी रो भार ओ ।। (२)
वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई.....

शंकर अंतर ध्यान कर कर, लखीया ससम वेद ओ । (२)
जगत जोगी बांचते ज्यांरे, ब्रह्म से नहीं भेद ओ ।। (२)
वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई.....

भजन द्वादश शील को, सरवण सुर में देख ओ । (२)
तुई तुई त्रवणी सांद सुरती, बाहर भीतर एक ओ ।। (२)
वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई.....

अनोपदासजी ब्रह्म ज्ञानी, भजन में भरपुर ओ । (२)
सोनी ओ हरिचन्द सत भणे, ज्यांरे नित वरसे नूर ओ ।। (२)
वारी भजन उतपत आद ॐकार को भाई.....

राग-मलार मोरीया भजन वाणी-१

वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थोरो बाग ।
हेलो दिजे ओ मन मोरीया ओ जी ।। टेर ।। (२)

प्रथम समरुं सरस्वती ओ मांई, अधर अमर फल दीजिये ओ जी । (२)
मनसा ओ मोरली संजोवे ओ बीज, जल तो सींचो ओ मन मोरीया ओ जी ।। (२)
वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थारो बाग.....

धरणी से अधर अधर धरणी मांय, बीजग ऊंगा ओ दरसे पांनरा ओ जी । (२)
थाणा सेवे ओ मनसा मोरली ओ, जल तो सींचो ओ मन मोरीया ओ जी ।। (२)
वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थारो बाग.....

सतरा ओ रुख्र दया ओ संदी डाल, पछम पहोंची ओ ज्यांरी डालीया ओ जी । (२)
मनसा ओ मोरली ख्रमीया रो देवे ख्रात, जल तो सींचो ओ मन मोरीया ओजी ।। (२)
वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थारो बाग.....

हरीया ओ पान पचरंग ज्योंरा फूल, फल तो पीला ओ रस आविया ओ जी । (२)
मनसा ओ मोरली जोयाओ डालम डाल, फल तो पाकाओ मन मोरीया ओ जी ।। (२)
वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थारो बाग.....

दरख्रत अधर शीतल ज्यांरी छांय, फल तो उतारो मन मोरीया ओ जी । (२)
फल तो झेले ओ मनसा मोरली ओ, फल तो जीमो ओ मन मोरीया ओ जी ।। (२)
वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थारो बाग.....

आप अनोप वे फल पाविया ओ, भक्ति बीजग लाया देश में ओ जी । (२)
सोनी हरिचन्द वे फल सेविया, फल तो मीठा ओ मन मोरीया ओ जी ।। (२)
वारीओ कबद ओ कागली वणसे ला थारो बाग.....

राग-मलार सुवटा भजन वाणी-२

भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण ।
तुई तुई लव लावो आतम सुवटा ओ जी ।। टेर ।। (२)

आद विचारो आतम सुवटा ओ, माला फेरो ओ निज नाम री ओ जी । (२)
सुरता ओ सुवटी करेला थांरी सेव, सद मन राखो ओ सुआ सुवटा ओ जी ।। (२)
भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण.....

जोड़ी जे पांव पदम आसण पाठ, निर्भय थरपो ओ थांणा नाभ में ओ जी । (२)
सुरता ओ सुवटी सांदेला थांरी डोर, शिखर चढ़ीजे सुआ सुवटा ओ जी ।। (२)
भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण.....

थांरी पांखों में पवना उरद मुख डोर, अधर आवे ओ पंछी झूलता ओ जी । (२)
सुरता ओ सुवटी झाली है थांरी डोर, सगम चढ़ो ओ सुआ सुवटा ओ जी ।। (२)
भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण.....

भंवर गुफा में बाजे ओ झणकार, नेवर बाजे ओ पंछी पांव में ओ जी । (२)
सुरता ओ सुवटी सजेला सणगार, पंछी जोवो ने थांरो पींजरो ओ जी ।। (२)
भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण.....

दीपक चार अखंड ज्योंरी ज्योत, बीच में झूले ओ पंछी पींजरो ओ जी । (२)
सुरता ओ सुवटी चलावे ओ डोर, हीण्डे हींचो ओ हरिया सुवटा ओ जी ।। (२)
भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण.....

आप अनोप अंतर ध्यान से ओ, पंछी पढ़ायो बोळ्या प्रेम से ओ जी । (२)
सोनी हरिचन्द सेव्यो सुवटो ओ, सेवा करती ओ सुरता सुवटी ओ जी ।। (२)
भाईरां कर लेजो करणी चढ़ोला निरवाण.....

राग-मलार कोयलरो भजन वाणी-३

वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम,
सुखमण करणी ओ करती कोयलरी ओ जी ।। टेर ।। (२)

आद बीजग जल जाणीये ओ, रचीया ब्रह्मांड खंड आतमा ओ जी । (२)
पांच तत्व गुण तीन में ओ, करणी करे ओ तपसी कोयलरो ओ जी ।। (२)
वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम.....

भजन जगाड़ो जोगी भोम से ओ, चढ़िया कुंभक रेचक उतरे ओ जी । (२)
घाट-ओ-घट वकमी वाट में ओ, करणी करे ओ तपसी कोयलरो ओ जी ।। (२)
वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम.....

सूरा नर तपसी ओ दोनु भेटिया ओ, मलिया त्रवणी चंदा मेल में ओ जी । (२)
उलट-सुलट ॐकार में ओ, करणी करे ओ तपसी कोयलरो ओ जी ।। (२)
वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम.....

हीरा जड़िया ओ सुन महेल में ओ, निरंजन ज्योति ओ दरसे जागता ओ जी । (२)
घण-घण घंटा वाजे ओ वेगम तार, करणी पाया ओ दरशण कोयलरो ओ जी ।। (२)
वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम.....

अणबे वाजा ओ ज्यांरे वाजिया ओ, मादी नर आया ओ दोनु महेल में ओ जी । (२)
वटे चोपट मांडी है सत नाम री ओ, करणी जीता ओ आतम कोयलरो ओ जी ।। (२)
वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम.....

अनोपस्वामी ओ रमीया सोगटे ओ, द्वादश जीता ओ सुन महेल में ओ जी । (२)
सोनी हरिचन्द पासा झेलिया ओ, अणबे सुरसत बाजी तीन में ओ जी ।। (२)
वारीओ कृष्ण कोयलरो चेतन ज्यांरो नाम.....

राग-मलार हंसलो भजन वाणी-४

वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा ओ वचन रुप,
मगन करणी सूं मोती पाविया ओ जी ।। टेर ।। (२)

अखंड जरणी ओ आदु ओलख्यो ओ, जरणी देवे ओ अन्न फल फुलड़ां ओ जी । (२)
सपत दीप ओ नव द्वार में ओ, दस में दरसे ओ मोती सायर में ओ जी ।। (२)
वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा.....

पछम दिशा सूं आवे वादली ओ, पवना आवे ओ मेरु पहाड़ से ओ जी । (२)
हंसली हंसा सूं करे ओ ललकार, हालो हंसा ओ संदु सायर में ओ जी ।। (२)
वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा.....

हद से बेहद में गाजे ओ गेरो गाज, मदरी वरसे ओ हंसा वादली ओ जी । (२)
हंसली हंसा सूं करे ओ ललकार, मोती वेला ओ हंसा सायर में ओ जी ।। (२)
वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा.....

छूटा शीलर सरवर भेटीया ओ, हंसा बसे ओ संदु सायर में ओ जी । (२)
वरसे वादल मोती नीपजे ओ, अखंड उजाला शीतल रोशनी ओ जी ।। (२)
वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा.....

हंसे हीडा ओ वठे घालिया ओ, गगन मंडल रे ओ गोख में ओ जी । (२)
लहेरा लेवे ओ हंसा हंसली ओ, मोती पाया ओ अमर लोक में ओ जी ।। (२)
वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा.....

अनोपस्वामी ओ सायर भेटीया ओ, मोती पाया ओ नीज नाम रा ओ जी । (२)
सोनी हरिचन्द मोती सेवीया ओ, मोती चगे ओ हंसा हंसली ओ जी ।। (२)
वारीओ अणबे ओ हंसली हंसा.....

राग–मलार कुकड़ा भजन वाणी–५

वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कूकड़ी ओ,
जोग जगाड़ो केवल कूकड़ा ओ जी ।। टेर ।। (२)

परथम पहोरे ओ तारा तेज में ओ, दूजे दरसे ओ चंदा शोभता ओ जी । (२)
तीजे पहोरे ओ जोगी जागता ओ, भजन जगाड़ो केवल कूकड़ा ओ जी ।। (२)
वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कुकड़ी.....

गंगा खलके ओ उलटी भोम से ओ, आवे सुखमण सोरम घाट से ओ जी । (२)
जोगी न्हावे ओ निरमल नीर में ओ, भजन जगाड़ो केवल कूकड़ा ओ जी ।। (२)
वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कुकड़ी.....

चादर धोवे ओ त्रवणी तीर पे ओ, भस्मी चढ़ावे जोगी भाव री ओ जी । (२)
अखे ओ मंडल आसण पूरीया ओ, भजन जगाड़ो केवल कूकड़ा ओ जी ।। (२)
वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कुकड़ी.....

गंगा हर गोमती बरसे ओ अमृत धार, चौथा पदमे ओ सूरज उगता ओ जी । (२)
वटे साजे समाधी जोगी सुन में ओ, भजन जगाड़ो केवल कूकड़ा ओ जी ।। (२)
वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कुकड़ी.....

परदे बजावे जोगी बंसरी ओ, आगम वेगम रे ओ बीच में ओ जी । (२)
केवल कूदरत एकण तीर पे ओ, निर्भय परसी ओ केवल कूकड़ा ओ जी ।। (२)
वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कुकड़ी.....

अनोपस्वामी ओ न्हाया गंग में ओ, निर्भय गंगाओ न्हाई नाम से ओ जी । (२)
सोनी हरिचन्द सोरम घाट पे ओ, भजन जगाड़ो केवल कूकड़ा ओ जी ।। (२)
वारीओ करणी सेवे ओ कूदरत कुकड़ी.....

राग–देश गणपति भजन वाणी–१

वारी अलखराज में आगलवाणी, जुग में दरसण देसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।। टेर ।।

वारी सदा गुणपती शीश नमावुं, आदगुणी उपदेसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।।
वारी अलख्र राज में आगलवाणी.....

वारी नकलंग पाठ निरंजन पूजा, ज्यां गुणपती बेसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।।
वारी अलख्र राज में आगलवाणी.....

वारी आतम से ॐकार जगावो, सोवन शिख्रर जाय रेसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।।
वारी अलख्र राज में आगलवाणी.....

वारी स्वासे स्वास समरणा फेरो, थांरी आप अरज सुण लेसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।।
वारी अलख्र राज में आगलवाणी.....

वारी अनोपदास गुणवंती बाबो, समरियां सब गुण देसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।।
वारी अलख्र राज में आगलवाणी.....

वारी सोनी हरिचन्द करे वीणती, गुणपत लीला ऐसी ओ गुणपतजी ।(२)
वारी सब गुण दीजो स्वामीजी ।।
वारी अलख्र राज में आगलवाणी.....

राग–देश पंडतजी भजन वाणी–२

वारी रळी फरे तो संग में राखो, हरदम दीजे हेलो ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।। टेर ।।

वारी सुरत वावली नहीं समझे तो, अलख अखाड़े मेलो ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।।
वारी रळी फरे तो संग में राखो.....

वारी सुद बुद संख्या शील भणावो, पछे भजन भणावो सेला ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।।
वारी रळी फरे तो संग में राखो.....

वारी पांच कला री मोटी महिमा, पांचों रो परचेलो ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।।
वारी रळी फरे तो संग में राखो.....

वारी अलख अखाड़े भणीया वोतो, सदर चौक में खेलो ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।।
वारी रळी फरे तो संग में राखो.....

वारी अनोपदास बाबारी कलमों, झेल सको तो झेलो ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।।
वारी रळी फरे तो संग में राखो.....

वारी सोनी हरिचन्द सूरत भणाई, ज्यांमें कुण गुरु कुण चेला ओ पंडतजी ।(२)
वारी अमर नाम ओलखावीजे ।।
वारी रळी फरे तो संग में राखो.....

राग-देश आलमजी भजन वाणी-३

वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो, ज्योंने कण वद होवे ओ मालुम जी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।। टेर ।।

वारी केवल नाम कूदरती माला, थांरे देवल मांय दरसीजे ओ आलमजी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।।
वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो.....

वारी पांच मार परदा में रेवे, वटे पांचों सूं परसीजे ओ आलमजी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।।
वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो.....

वारी तिरगुण तंत, तंत तिरगुण में, वटे जुमले कर जोवीजे ओ आलमजी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।।
वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो.....

सुख्रमण भांण, भांण सुख्रमण में, दीपक वां दरसीजे ओ आलमजी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।।
वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो.....

वारी अनोपदास आनंदी जोगी, वटे पूरां सूं परसीजे ओ आलमजी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।।
वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो.....

वारी सोनी हरिचन्द पिया अमीरस, वटे वादलियां वरसीजे ओ आलमजी ।(२)
वारी अमर प्याला पीवीजे ।।
वारी अंत आकड़ो भीतर भरीयो.....

राग-देश साधुजी भजन वाणी-४

वारी कबद शंकणी कोरी टालो, हरसूं हवा मिलावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।। टेर ।।

वारी मूल कमल पर आसण पुरो, त्रवणी में तार मिलावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।।
वारी कबद शंकणी कोरी टालो.....

वारी नेतर दोय नासका माथे, सुर से सूरत मिलावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।।
वारी कबद शंकणी कोरी टालो.....

वारी सुर का मणीया पवन तार में, दम दम शिखर चढ़ावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।।
वारी कबद शंखणी कोरी टालो.....

वारी उरद अजंपा रटो रीत से, झलमल ज्योत जगावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।।
वारी कबद शंकणी कोरी टालो.....

वारी अनोपदास अलखरी पूजा, सोवन शिखर सत लावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।।
वारी कबद शंकणी कोरी टालो.....

वारी सोनी हरिचन्द जपे अजंपा, उलट अमर पद पावो ओ साधुजी ।(२)
वारी निरगुण माला फेरीजे ।।
वारी कबद शंकणी कोरी टालो.....

राग-बरहन जोगाराम भजन वाणी-१

मूरख मरम सवाद नहीं जाणे, मिठी लागे छे के मोली ।
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।। टेर ।।

परथम देव गणपती पूजो, भजो सरस्वती भोली, (२)
सुमरे ज्यांने सुद्ध-बुद्ध देवे, दारी फिरे से दोली । (२)
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।।
मूरख मरम सवाद नहीं जाणे.....

जोगी हुआ जुगत नहीं जाणे, झाली हाथ में झोळी, (२)
गुरुगम और खबर नहीं गुण की, फिरे पराई पोळी । (२)
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।।
मूरख मरम सवाद नहीं जाणे.....

समरण करो समझ मांय वेतो, लखो अलखजीरी ओळी, (२)
उलट अमीरस पीओ उरद से, जहर दूर जाय ढोळी । (२)
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।।
मूरख मरम सवाद नहीं जाणे.....

वारी दीपक जोय दुरस कर देवल, करो कबद की होळी, (२)
झूठा काल जवर में झालो, पछे रमो रंग रोळी । (२)
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।।
मूरख मरम सवाद नहीं जाणे.....

आसण अधर अखंडी देवा, झलके ज्योत पीली धोळी, (२)
दया हुई जद दरशण पाया, धणी लिया मोय टोळी । (२)
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।।
मूरख मरम सवाद नहीं जाणे.....

वारी आप अनोप मलिया गुरु पूरा, समझ बताई बोळी, (२)
सोनी हरिचन्द पीया अमीरस, भरा प्याला सोळी । (२)
ओ संतो भाई लावा धरम रा लोरी, ज्ञान से पीवो अमीरस खोली ।।
मूरख मरम सवाद नहीं जाणे.....

राग-बरहन जोगाराम भजन वाणी-२

जड़ चेतन और सरब बीज की धरण मात दातारी ।
ओ निरंजन, गुणपतजी गुण धारी संत सब सेवा करो विचारी ।। टेर ।।

वारी परथम पाठ परम पद पूजा, गुणपत आसण धारी, (२)
सरब जून ज्यांरे अंग में उपजी, सबका सिरजन हारी (२)
ओ निरंजन, गुणपतजी गुणधारी संत सब सेवा करो विचारी ।।
जड़ चेतन और सरब बीज की.....

परगट ज्योत सरासर दरसे, वद-वद कुल वसतारी, (२)
पांच तंत गुण तीन आठ में, न्याय तणो निरधारी (२)
ओ निरंजन, गुणपतजी गुणधारी संत सब सेवा करो विचारी ।।
जड़ चेतन और सरब बीज की.....

वारी गुण को जाणे सोई गुणपती, आप तरे और तारी, (२)
लख चौरासी जून सब गुण की, गुण का नर और नारी (२)
ओ निरंजन, गुणपतजी गुणधारी संत सब सेवा करो विचारी ।।
जड़ चेतन और सरब बीज की.....

वारी भागे भरम भेद जद पावे, घर जोया गिरधारी, (२)
उतपत और देख्य उण घर की, कूदरत में किरतारी (२)
ओ निरंजन, गुणपतजी गुणधारी संत सब सेवा करो विचारी ।।
जड़ चेतन और सरब बीज की.....

वारी वरसालो बसती में वरसे, घोर पड़े घणधारी, (२)
परथम गुणी पृथ्वी दरसे, आतम रो आधारी (२)
ओ निरंजन, गुणपतजी गुणधारी संत सब सेवा करो विचारी ।।
जड़ चेतन और सरब बीज की.....

वारी आप अनोप जगत का वारु, अदल न्याय अवतारी, (२)
सोनी हरिचन्द गुणपत पूज्या, गुण की बात विचारी (२)
ओ निरंजन, गुणपतजी गुणधारी संत सब सेवा करो विचारी ।।
जड़ चेतन और सरब बीज की.....

राग-बरहन जोगाराम भजन वाणी-३

तीन पांच में करणी करलो फेर जनम नहीं आसी ओ,
धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।। टेर ।।

वारी आदु कला तो अमरपति में, मरण कला सब काची, (२)
भजन कला भगती में दरसे, जोग कला वनवासी । (२)
ओ धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।।
तीन पांच में करणी करलो फेर.....

वारी गरव झूठ और काल तीसरो, कबदया दबदण दासी, (२)
पर धन पाप सभी में सामिल, करे धरम की नासी । (२)
ओ धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।।
तीन पांच में करणी करलो फेर.....

वारी हरिजन हौज भरा हीरदा में, निरमल नीर नवासी, (२)
पांचोई कपड़ा धोय लो जल में, सरब दाग मिट जासी । (२)
ओ धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।।
तीन पांच में करणी करलो फेर.....

चंद्र-भांण दोय दम की ज्योता, आठ पहोर उजासी, (२)
गगन मंडल घड़ीयालां वाजे, जण घर जाय समासी । (२)
ओ धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।।
तीन पांच में करणी करलो फेर.....

वारी नाभी कमल में नौपत बाजे, तीन गुण नरवासी, (२)
तीन गुणों में तीरगुण माला, फेरो स्वास उसासी । (२)
ओ धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।।
तीन पांच में करणी करलो फेर.....

वारी आप अनोप अमर पद पाया, उगम देश उमासी, (२)
सोनी हरिचन्द फेरी समरणा, लगन मगन होय जासी । (२)
ओ धरम की फेरो समरणा साची, जनम तक वघन काल टल जासी ।।
तीन पांच में करणी करलो फेर.....

राग-बरहन जोगाराम भजन वाणी-४

नत पत नीर नाम से सींचो करम पाप दूर टाली ओ,
वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे पान फूल फल डाली ।। टेर ।।

वारी आदु बीज अदल कर खेती, बांधो प्रेम की पाली, (२)
मकर मूल वा तो बारे काड़ो, थांरे हळ खेड़े मनमाली । (२)
ओ वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे गोड़ फूल फल डाली ।।
नत पत नीर नाम से सींचो करम.....

वारी हद में वायो हेत से ऊंगे, वाजी तणों में ताली, (२)
सुरत सुहागण फरे बाग में, उड़ाई कागली काली । (२)
ओ वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे गोड़ फूल फल डाली ।।
नत पत नीर नाम से सींचो करम.....

वारी उंगा बीज अधर फल लागा, लिया ब्रह्म सूं भाली, (२)
शीतल खेत वादली बरसे, पाणी आवे परनाली । (२)
ओ वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे गोड़ फूल फल डाली ।।
नत पत नीर नाम से सींचो करम.....

वारी पाका आम रंग में पीला, आदु आम रसाली, (२)
अदर अमर फल कोई एक लेवे, ज्यांरे अंग में ज्योत उजाली । (२)
ओ वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे गोड़ फूल फल डाली ।।
नत पत नीर नाम से सींचो करम.....

वारी सतरा आम सुगन में परगट, तीन पांच दस डाली, (२)
जीमत लगे अमर फल मीठा, सोवन वरण सुआली । (२)
ओ वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे गोड़ फूल फल डाली ।।
नत पत नीर नाम से सींचो करम.....

वारी आप अनोप अमर फल पाया, तोड़ी जगत की जाली, (२)
सोनी हरिचन्द लिया अमर फल, सत गुरुजी री बलिहारी । (२)
ओ वचन से राखो सुरत रखवाली जोवो पछे गोड़ फूल फल डाली ।।
नत पत नीर नाम से सींचो करम.....

राग-पीलु अजरी सरबंग भजन-१

पड़रक मंतर समर अगोरी, अजर प्याला पीजे ओ सरबंग ।
अजरी अणवद रीजे हो, हो जी ।। टेर ।।

अजरा आद उगम से बरसे, भर प्याला भर लीजे हो हो जी । (२)
पड़ प्याला परसण कर सरबंग, दल देवन कुं दीजे ओ सरबंग ।। (२)
अजरी अण वद रीजे हो हो जी ।। पड़रक मंतर समर अगोरी.....

उलटी नाल अखंडी दरशण, सुलटी सरबंग कीजे हो हो जी । (२)
वारी खिड़की खोल खबर कर उणकी ओ, उलट अमीरस पीजे ओ सरबंग ।। (२)
अजरी अण वद रीजे हो हो जी ।। पड़रक मंतर समर अगोरी.....

वारी सपने चोर वघन नहीं व्यापे, छल मातर चमकीजे हो हो जी । (२)
मुख मंजन मुगत का प्याला, दगलबाज कूं न दीजे ओ सरबंग ।। (२)
अजरी अण वद रीजे हो हो जी ।। पड़रक मंतर समर अगोरी.....

वारी उलटी तेजी, सुलटी अतेजी, दोए कळा लखलीजे हो हो जी । (२)
दिल परसण कर कर दरसण कूं, हरदम हुकम रखीजे ओ सरबंग ।। (२)
अजरी अण वद रीजे हो हो जी ।। पड़रक मंतर समर अगोरी.....

वारी सरबंग पाक सरबंग मेला, दोए सरबंग दरसीजे हो हो जी । (२)
उजल पाक अलख घर आदर, परम ज्योत परसीजे ओ सरबंग ।। (२)
अजरी अण वद रीजे हो हो जी ।। पड़रक मंतर समर अगोरी.....

वारी अनोपदास गुरु हद-बे-हद में, खुश रुपी खेलीजे हो हो जी । (२)
सोनी हरिचन्द दोए दुरस कर, जुगती सूं झेलीजे ओ सरबंग ।। (२)
अजरी अण वद रीजे हो हो जी ।। पड़रक मंतर समर अगोरी.....

राग-पीलु सरसत सरबंग भजन-२

वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर, धरणी में धार मिलावुं ओ सरबंग ।
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। टेर ।।

सरस्वत मांई प्रेम कर पूजु, गणपत देव मनावुं हो हो जी । (२)
सुद-बुद सरबंग दीजो हो देवी, प्रेम प्याला पावु ओ जोगण ।। (२)
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर.....

वारी गुदा चकर की गंदण मेटु, सोरम घाट चलावु हो हो जी । (२)
जंतर जोग जुगत कर जोवुं, रोम रोम रंग लावुं ओ जोगण ।। (२)
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर.....

वारी नल कमल की नाड़ चलावुं, दरदी दूर हटावुं हो हो जी । (२)
भीतर जोए भरम कूं तोडूं, अंतर अगन पचावुं ओ जोगण ।। (२)
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर.....

वारी जात अजात जगत नहीं जांसुं, नहीं कोई नगर सतावुं हो हो जी । (२)
मुरदा देव मुरत नहीं पूजु, झलमल ज्योत जगावुं ओ जोगण ।। (२)
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर.....

वारी नव दरवाजे सरबंग चौकी, दसमें शंख्र बजावुं हो हो जी । (२)
सरबंग देव सकल में दरसे, दिन-दिन दरशण पावुं ओ जोगण ।। (२)
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर.....

वारी अनोपदास सरबंगी बाबो, ज्यां कूं शीश नमावुं हो हो जी । (२)
सोनी हरिचन्द अजर जगाया, उलट अमर पद पावुं ओ जोगण ।। (२)
अजरा उलट समावुं हो हो जी ।। वारी आद अगोरी अमर पद पड़कर.....

राग-पीलुं अजरा सरबंग भजन-३

वारी पीया प्याला मन मतवाला, निर्भय नशा चढ़ाया ओ सरबंग ।
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। टेर ।।

वारी आदु भजन अनादी भगती, उण घर अजरा पाया हो हो जी । (२)
ज्ञान ध्यान गुरुगम सब साथे, अगम भोम ओलखाया ओ सरबंग ।। (२)
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। वारी पीया प्याला मन मतवाला.....

वारी उगम देश नुरगुण परगासा, ज्यां सरबंगी माया हो हो जी । (२)
चश्मा लगा सुरत कूं सांदी, दरवाजा दरसाया ओ सरबंग ।। (२)
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। वारी पीया प्याला मन मतवाला.....

वारी चेतन कला समझ की कूंची, दरवाजे पर आया हो हो जी । (२)
लग गई कूंची तुट गया फंदा, खट मंदर खोलाया ओ सरबंग ।। (२)
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। वारी पीया प्याला मन मतवाला.....

वारी शशी और भांण देवल में दरसे, तारा मंडल छाया हो हो जी । (२)
अण देवल में अखंडी देवा, कर दरसण गुण पाया ओ सरबंग ।। (२)
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। वारी पीया प्याला मन मतवाला.....

वारी अलख अखाड़े वाजा वाजे, वरगु और शहेनाइयां हो हो जी । (२)
अणबे नाद गगन में गरजे, घड़ियाला घरणाया ओ सरबंग ।। (२)
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। वारी पीया प्याला मन मतवाला.....

वारी अनोपदास सरबंग में खेले, सरबंग भोग चढ़ाया हो हो जी । (२)
सोनी हरिचन्द फेरी समरणा, सूता देव जगाया ओ सरबंग ।। (२)
अजरावां उलटाया हो हो जी ।। वारी पीया प्याला मन मतवाला.....

राग–पीलु धरणी सरबंग भजन–४

वारी हर भगती हिरदे में रखना, दिल में रखो दिलासा ओ सरबंग ।
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। टेर ।।

धरणी आद जगत को दरसे, ज्यां सरबंग प्रकाशा हो हो जी । (२)
जाजम ढली कूदरती चौड़े, आतम तणा रंग रासा ओ सरबंग ।। (२)
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। वारी हर भगती हिरदे में रखना.....

वारी सोला का तो सकल पसारा, बारा में सुख वासा हो हो जी । (२)
नव खंड में नरभे सरबंगी, सपत दीप आकाशा ओ सरबंग ।। (२)
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। वारी हर भगती हिरदे में रखना.....

वारी सरबंग धरणी सरबंग जरणी, सरबंग गर्भ निवासा हो हो जी । (२)
शशी और भांण सरबंग में दरसे, सरबंग स्वास उसासा ओ सरबंग ।। (२)
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। वारी हर भगती हिरदे में रखना.....

वारी किरतन गाना दम उलटाणा, तन में करो तपासा हो हो जी । (२)
ॐ सो ॐ सरबंग में बोले, सरबंग घट घट वासाओ सरबंग ।। (२)
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। वारी हर भगती हिरदे में रखना.....

वारी नेकी धरम घणी कर जाणों, राखो मन विश्वासा । (२)
मालिक माला सरबंग में दरसे, समरण करलो स्वासा ओ सरबंग ।। (२)
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। वारी हर भगती हिरदे में रखना.....

अनोपदास सुरा सिद्ध जोगी, करणी में कैलाशा हो हो जी । (२)
सोनी हरिचन्द लखे सदर में, हिरदे बहोत हुलासा ओ सरबंग ।। (२)
खेलो नाम खुलाशा हो हो जी ।। वारी हर भगती हिरदे में रखना.....

राग-पीलु सुरता सरबंग भजन-५

वारी रमझम फरती खेल करंती, अमर रुकड़ी पीधी ओ गुरु ।
करी सुरत को सीधी ।। टेर ।।

वारी आद जुगाद अनादी रुकड़ी, लगन सरुपी लीधी हो हो जी । (२)
पहेली सत गुरु आप चढ़ाई, पछे दुरस कर दीधी ओ गुरु ।। (२)
करी सुरत को सीधी हो हो जी ।। वारी रमझम फरती खेल करंती.....

वारी खुश में खेल खलक में फरती, आद भजन सूं ऐदी हो हो जी । (२)
अंग आलस मरोड़ा मुख में, रंग लगाती मेंदी ओ गुरु ।। (२)
करी सुरत को सीधी हो हो जी ।। वारी रमझम फरती खेल करंती.....

वारी चेतन पुरुष बसे गढ़ भीतर, सुरत वीणती कीदी हो हो जी । (२)
हाथ जोड़ कर हाजर उभी, ऐब अलग कर दीधी ओ गुरु ।। (२)
करी सुरत को सीधी हो हो जी ।। वारी रमझम फरती खेल करंती.....

वारी सुन घर सुरती तार मिलाया, लव लाला कूं वींधी हो हो जी । (२)
दल दरियाव भरा मन मोती, खबरी लाल खरीदी ओ गुरु ।। (२)
करी सुरत को सीधी हो हो जी ।। वारी रमझम फरती खेल करंती.....

वारी सुरता सखी सदर में आई, फर-फर लाला फेदी हो हो जी । (२)
मूरख मरम मोल नहीं समझे, जवेरी सुग-सुग लीधी ओ गुरु ।। (२)
करी सुरत को सीधी हो हो जी ।। वारी रमझम फरती खेल करंती.....

वारी आप अनोप देव पद पाया, आद भजन का भेदी हो हो जी । (२)
सोनी हरिचन्द गुण समझाया, आद समरणा लीधी ओ गुरु ।। (२)
करी सुरत को सीधी हो हो जी ।। वारी रमझम फरती खेल करंती.....

राग-रासड़ा भजन-१

झलामल जोवते कांई, किसी का मानते नांही,
हो झलामल जोवते कांई, किसी का मानते नांही ।। टेर ।।

पूरण भगती प्रेम की ओ वीरा, दुविद्या से आ दूर । (२)
रास मंडल में रास्ती खेलो, छोड़ दो कपट कूड़ ।।
झलामल जोवते कांई.....

वातोरा घणां आगला हो थे, विद्या में भरपुर । (२)
लक्ष्मी में लपटीजिया ओ, थांरे अंतर दीसे कूड़ ।।
झलामल जोवते कांई.....

अंग थी घणा उजला हो थे, बांयों से बलदार । (२)
दया धरम तो जाणते नहीं, ने देखियो है कलदार ।।
झलामल जोवते कांई.....

आतमा रा दरशण करो थे, सत रा कीजो काम । (२)
दया बुद्धि वरतीत करो, थोरो अमर रेसी नाम ।।
झलामल जोवते कांई.....

भगती कीजो भाव से रे भाई, सुणजो दोनुई कान । (२)
प्रेम करेने बुजजोरे भाई, सतगुरां री श्यान ।।
झलामल जोवते कांई.....

अनोपस्वामी पूरण मलिया, दिया दीपक जोय । (२)
सोनी हरिचन्द प्रेम से गाया, श्यान बताई मोय ।।
झलामल जोवते कांई.....

राग-रासड़ा भजन-२

राजेश्वर न्याय को झेलो, धणी मारा सुणजो हेलो ।
हो राजेश्वर न्याय को झेलो, धणी मारा सुणजो हेलो ।। टेर ।।

जालिये जाल जगत में कीदो, गत में पाड़ी फूट । (२)
पृथ्वी नामे पाप चलायो, मांडी है लूटा लूट ।।
राजेश्वर न्याय को झेलो.....

गऊ सींगार खुराक में आणी, जालिया संदो काम । (२)
मुमती वाळा साद चलाया, तोड़ते धरम नाम ।।
राजेश्वर न्याय को झेलो.....

दंड गऊआं पर दंड भैंसों पर, दंडी अज्या ढोर । (२)
रतनों ऊपर कलंक लगाया, संत कूं कीधा चोर ।।
राजेश्वर न्याय को झेलो.....

जालिये मानव बुध कूं फेरी, जालिये कीधा चोर । (२)
गऊ अज्या पर घात चलावी, मारते कुक्कड़ मोर ।।
राजेश्वर न्याय को झेलो.....

लख चौरासी जून कूं तारो, बांधलो धरम कार । (२)
प्रेम करे धणी पृथ्वी तारो, सांभलो सिरजनहार ।।
राजेश्वर न्याय को झेलो.....

अनोपस्वामी पूरण मलिया, श्यान बताई मोय । (२)
सोनी हरिचन्द न्याय सरुपी, शीश नमावुं तोय ।।
राजेश्वर न्याय को झेलो.....

रास-रासड़ा भजन-३

धणी मारा आवजो वारु, जीवोंने तारवा सारु ।
हो धणी मारा आवजो वारु, जीवोंने तारवा सारु ।। टेर ।।

आप बड़ा हो आप अखंडी, आप उपावन हार । (२)
आपका रुप में आप समाया, आप ही हो अवतार ।।
धणी मारा आवजो वारु.....

आप जड़ चेतन में बोलो, आप हो तरवर पात । (२)
आप तेजी में आप कूंजर में, आप निरंजन नाथ ।।
धणी मारा आवजो वारु.....

आप उगम हो आप वायु में, आप हो शीतल तेज । (२)
आप पृथ्वी में प्राण बसाया, आप देराया देश ।।
धणी मारा आवजो वारु.....

आप गऊओ में आप अज्या में, आप हो वाड़ी वेल । (२)
लख चौरासी लाकड़ा चीरीया, आप बणायो खेल ।।
धणी मारा आवजो वारु.....

आप दया कर आप पधारो, आपरो है संसार । (२)
परसण हो कर पाप कूं मेटो, सांभळो सिरजनहार ।।
धणी मारा आवजो वारु.....

अनोपस्वामी आप सरुपी, पृथ्वी में प्रकाश । (२)
सोनी हरिचन्द दुर्बल दाखे, आपरी मोरे आस ।।
धणी मारा आवजो वारु.....

राग-रासड़ा भजन-४

जाली लोक दूर हो जासी, पृथ्वी पर फूल प्रकाशी ।
हो जाली लोक दूर हो जासी, पृथ्वी पर फूल प्रकाशी ।। टेर ।।

बावने राजा अविछल रेवजो, रेवजो बोयंतर ख्यान । (२)
एक मने थी पाप तजो तो, वदसी आतम ज्ञान ।।
जाली लोक दूर हो जासी.....

जाजम राली चौक में ओ जद, आवसी बावन राव । (२)
ख्यान राजेश्वर देख सौदागर, खेलसी पीछे दाव ।।
जाली लोक दूर हो जासी.....

बहु फुलेला पृथ्वी ओ जद, चेतसी आलम आप । (२)
मार जालियां कूं दूर हटावी, मेटसी गुपत पाप ।।
जाली लोक दूर हो जासी.....

जीत होसी दोय दीन की ओ जद, खपसी जाली जंद । (२)
जालियां संदी कामणी खपे, जदी मटेला फंद ।।
जाली लोक दूर हो जासी.....

सुख्य होसी संसार में ओ जद, गावसी मंगलासार । (२)
प्रेम सरुपी पंच भेला वे, बांधसी धरम पाल ।।
जाली लोक दूर हो जासी.....

अनोपस्वामी पूरण मलिया, मुगती रा मेलाण । (२)
सोनी हरिचन्द गावे गरीबो, आगम रा सेलाण ।।
जाली लोक दूर हो जासी.....

राग-रासड़ा भजन-५

आज मांरे गुरुजी आया, वधावो प्रेम से गाया ।
हो आज मांरे गुरुजी आया, वधावो प्रेम से गाया ।। टेर ।।

आप सरोदे गुरुजी आया, सुख में संपत लाये । (२)
प्रेम करे गुरु पूजीये ओ, थांरा आतम देव जगाए ।।
आज मांरे गुरुजी आया.....

मृदंग ताल पखावल वाजे, सर्ज करे नर नार । (२)
रंग करे और मंगल गावे, संत बड़ा है दयाल ।।
आज मांरे गुरुजी आया.....

जगत रुपी जाजम रालो, मन में करो उसाव । (२)
अणबे खोज अलखजी पूजो, और पखालीजे पांव ।।
आज मांरे गुरुजी आया.....

भाव सरुपी भोजन ज्यांरे, गागर थाल भराय । (२)
प्रेम करे मांरा गुरुजी जीमे, अणबे नाद घोराय ।।
आज मांरे गुरुजी आया.....

लूंग डोड़ा और पान सोपारी, पावते श्रीफल सांई । (२)
प्रेम करे ने पूजजो ज्योंरा, गुरुजी आतम मांही ।।
आज मांरे गुरुजी आया.....

अनोपस्वामी देव सरुपी, आद कला दरसाय । (२)
सोनी हरिचन्द शीश नमाया, आनन्द मंगल थाय ।।
आज मांरे गुरुजी आया.....

राग-रासड़ा भजन-६

गुरुजी अनोप पाया, त्यागी ज्यांरे हाजर माया ।
हो गुरुजी अनोप पाया, त्यागी ज्यांरे हाजर माया ।। टेर ।।

अनोप तो एक अखंड रुपी, अनोप एकण रंग । (२)
बालक रुपी देश में खेले, अनोप चेतन संग ।।
गुरुजी अनोप पाया.....

चेतन ज्यांरे संग में खेले, कर समरणा सेल । (२)
सुन का शहेर में दीपक जोया, नित पुरीजे तेल ।।
गुरुजी अनोप पाया.....

पांच तत्व रो खेलणों ज्यांरे, तीन गुणों से वात । (२)
अनोप राम के संग में खेले, जुग में मंगल गाए ।।
गुरुजी अनोप पाया.....

नगरी में नारायण खेले, वाज रही घणघोर । (२)
अनोपस्वामी सेल रमाया, मारीया काल ने चोर ।।
गुरुजी अनोप पाया.....

ऐसा अनोप मन का सूरा, चेतन ज्यांरा काम । (२)
प्रेम सरुपी प्रसन्न हुआ, जैसे नकलंग श्याम ।।
गुरुजी अनोप पाया.....

अनोपस्वामी पूरण मलिया, देखते सर्वेई रंग । (२)
सोनी हरिचन्द चेन कूं पाया, सतगुरो रे संग ।।
गुरुजी अनोप पाया.....

राग-रासड़ा भजन-७

सती लोक धरम कूं ध्यावे, हीरा घणा हेत सूं पावे ।
हो सती लोक धरम कूं ध्यावे, हीरा घणा हेत सुं पावे ।। टेर ।।

सदा निरंजन देव कूं सेवो, आतम देव जगाए । (२)
प्रेम करे ने पूजिये ओ वीरा, मंसा मंगल गाए ।।
सती लोक धरम कूं ध्यावे.....

संत केवीजे सूरमा ओ, ज्यांरे तन में नहीं काल । (२)
नाम कूं झेल धरम कूं राखे, बांधते धरम पाल ।।
सती लोक धरम कूं ध्यावे.....

आद कला अंतर में जोयलो, ओलखो आतम रुप । (२)
आद स्वर्ग पृथ्वी जाणौ, ज्यां हुआ तपेश्वर भूप ।।
सती लोक धरम कूं ध्यावे.....

देवपुरी में देव निरंजन, देखलो खोल कपाट । (२)
नगरी में नारायण खेले, ज्यां मांडी जवेरी हाट ।।
सती लोक धरम कूं ध्यावे.....

टगसारां कारीगर ज्यांरे, नाम तणा व्यापार । (२)
हर हीरां कूं मोलवे जको, मालीक रो अधिकार ।।
सती लोक धरम कूं ध्यावे.....

अनोपस्वामी पूरण मलीया, पेरते माणक हीर । (२)
सोनी हरिचन्द दुरबल दाखे, मलिया आदु पीव ।।
सती लोक धरम कूं ध्यावे.....

राग-रासड़ा भजन-८

आदु सत धर्म झेलीजे, नशा तो नाम का कीजे ।
हो आदु सत धर्म झेलीजे, प्याला तो प्रेम का पीजे ।। टेर ।।

बीज बांधो सत धर्म को झेलो, वचन पालो जी । (२)
काळ को मार वचन को बांधो, कबद टालोजी ।।
आदु सत धर्म झेलीजे.....

दुविधा छोड़ जोयलो दीपक, दिल से टाळो दोष । (२)
कायम की जीत करो कब्जे में, जद रेवेला जोश ।।
आदु सत धर्म झेलीजे.....

वारी अजरी में बजरी मिलावो, भजन रे परियाण । (२)
मन पकड़ मगन में रेवो, पद पावो निर्वाण ।।
आदु सत धर्म झेलीजे.....

प्रेम का पंथ में पगला रोपो, करो कब्जो सोफेर । (२)
शत्रु जीत आजाद में रेवो, रख्यो भजन की लहेर ।।
आदु सत धर्म झेलीजे.....

वारी सुन का शहेर में आप विराजे, राख्यो सुरत सदाई । (२)
वहां हीरा की ज्योत जलत है, कभी अंधेरा नांही ।।
आदु सत धर्म झेलीजे.....

अनोपस्वामी पूरण मिलिया, उलटाया ओमकार । (२)
सोनी हरिचन्द ध्यान स्वरुपी, बाज रिया रणुकार ।।
आदु सत धर्म झेलीजे.....

राग-खमास गुणेश भजन-१

आवोरा गणपतजी बाला दरशण दीजो देव । (२)
दीपक धूप कपूर की आरती (२) सत से करुं सेव ।।
स्वामी थांरी सत से करुं सेव ।
आवोरा गणपतजी बाला दरशण दीजो देव ।। टेर ।।

प्रथम गुणेश पूजु देवता आगल वाण । (२)
क्रोड़ तेतीसा मे लाड़ला ओ धणी (२) आद गुरु परवाण गुणेशा आद गुरु परवाण ।।
आवोरा गणपतजी बाला.....

पांव खड़ाउआं नेवर वाजे मुख मे बाजे वेण । (२)
फिरता दीसो फूटरा ओ धणी (२) निरमल थांरा नेण, गुणेशा निरमल थांरा नेण ।।
आवोरा गणपतजी बाला.....

त्रवणी में तिलक विराजे माथे मुगट मोर । (२)
आरोधिया वेला आवजो ओ धणी (२) जाल दलो रा तोड़ गुणेशा जाल दलो रा तोड़ ।।
आवोरा गणपतजी बाला.....

पांच सातों में खेलिया ओ धणी रमीया नवोई बार । (२)
संत करे है विणती ओ धणी (२) अवरां रा अवतार गुणेशा अवरां रा अवतार ।।
आवोरा गणपतजी बाला.....

रिद्धी-सिद्धी थांरे पाय बिराजे, पूजते पंडित भूप । (२)
चरणे आयोंरी लाज रखीजे (२) गणपति घणरुप गुणेशा गणपति घणरुप ।।
आवोरा गणपतजी बाला.....

अनोपस्वामी देव सरुपी म्होय बताई श्यान । (२)
सोनी हरिचन्द गुणेश पूजीया (२) पार्वती सुतकान गुणेशा पार्वती सुतकांन ।।
आवोरा गणपतजी बाला.....

राग-खमास गुणेश पूजा भजन-२

आद गुणेशा अखंड रुपी भांण सरुपी तेज । (२)
अगर ऊपर आप को आसण (२) सुन में पोढ़ण सेज ।
अखंडी सुन में पोढ़ण सेज ।
आद गुणेशा अखंड रुपी भांण सरुपी तेज ।। टेर ।।

प्रथम देव गजानन्द पूजु, आद गुणी अवतार । (२)
मूल तख्त पर आप बिराजो, (२) पूज रहे नर-नार अखंडी पूज रहे नर-नार ।।
आद गुणेशा अखंड रुपी.....

आद बीजग में आपको जनम, आद का है उपदेश । (२)
आद एरण पे सुरती दीजे (२) गुण में है गुणेश अखंडी गुण में है गुणेश ।।
आद गुणेशा अखंड रुपी.....

अगनी वाय आकाश पृथ्वी जल, पांच की पूरण सोल । (२)
सूरती राखे देख द्वादस, (२) चढ़णा पीली पोल अखंडी चढ़णा पीली पोल ।।
आद गुणेशा अखंड रुपी.....

अला पींगला सुखमण सोजो, पांच कूं लावो ठोर । (२)
त्रवणी मे कर बांध पांचों कूं, (२) सांधलो गगन डोर अखंडी सांधलो गगन डोर ।।
आद गुणेशा अखंड रुपी.....

स्वास समरणा नाम निशानी, धीरज पांव धराय । (२)
त्रवणी महेल में गुणेश परसीया, (२) अणबे नाद घोराय अखंडी अणबे नाद घोराय ।।
आद गुणेशा अखंड रुपी.....

अनोपस्वामी गुण कूं पूजिया, साजिया सरवेई काज । (२)
सोनी हरिचन्द गुणेश पूजिया, (२) आद गुरु महाराज अखंडी आद गुरु महाराज ।।
आद गुणेशा अखंड रुपी.....

राग-खमास टोपी भजन-३

गुण की टोपी ग्यान से सीवो, नाम की चाले सुंई ।। (२)
उलट सुलट तार मिलावो (२) रटले तुई-तुई, ग्यानी भाई रटले तुई-तुई ।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो नाम की चाले सुंई ।। टेर ।।

गुण की टोपी ग्यान से सीवो बांधलो दसुंई द्वार । (२)
नासका सुंई कूं नेण से जोय के (२) पोयले भीतर तार, ग्यानी भाई पोयले भीतर तार ।।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो.....

गुण रजो गुण, गुण तमो गुण, गुण सतो गुण तीन । (२)
सांद बराबर सीवतां देख्रीया (२) जद आयो आकीन, ग्यानी भाई जद आयो आकीन ।।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो.....

पीला लीला धागा श्याम सफेदा पांचमा लालम लाल । (२)
सुरती राख्रे फेर पांचा कूं (२) देख्र टोपी को ख्र्याल, ग्यानी भाई देख्र टोपी को ख्र्याल ।।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो.....

अण टोपी के असतर जोयलो परदे लालम टूल । (२)
तीन पांचों कूं मेल बराबर (२) लायो ऊमर फूल, ग्यानी भाई लायो ऊमर फूल ।।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो.....

दोय पीला दोय लाल सफेदा दोय लीला एक श्याम । (२)
नव तारों की निर्गुण टोपी (२) पेरते आतम राम, ग्यानी भाई पेरते आतम राम ।।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो.....

अनोपस्वामी टोप कूं पेरिया, पेरिया आतम जोय । (२)
सोनी हरिचन्द सीवली टोपी (२) ॐ सो ॐ सुंई दोय,
ग्यानी भाई ॐ सो ॐ सुंई दोय ।।
गुण की टोपी ग्यान से सीवो.....

राग-खमास कालमार भजन-४

ऐसा है समशेर शिकारी काल कूं मारे वोई । (२)
अंत से अगनी नाम से जागी (२) जलती देखी सेई, कालीगारी जलती देखी सेई ।
ऐसा है समशेर शिकारी काल कूं मारे वोई ।। टेर ।। (२)

आर संतों की सील संतों की काम संतों की कंथ । (२)
नाम संतों की काल कूं रोके (२) सोई केवीजे संत सुरावीर सोई केवीजे संत ।।
ऐसा है समशेर शिकारी .....

वारी नाम दीपक से जोयलो नगर कहां बसे तेरा काल । (२)
घट सरासर खेलता देख्या (२) क्या बूढ़ा क्या बाल, सुरावीर क्या बूढ़ा क्या बाल ।।
ऐसा है समशेर शिकारी .....

मन घोड़ा तन त्राजणा ज्यांरे सील हुआ असवार । (२)
तीन पांचों कूं संग में लिया (२) घेरिया दसोई द्वार, सुरावीर घेरिया दसोई द्वार ।।
ऐसा है समशेर शिकारी .....

सैल बांध्या सत नाम का ज्यांरे घोर ले गुगर माल । (२)
पछम घाटी रोक लीनी जद (२) कोपण लागो काल, सुरावीर कोपण लागो काल ।।
ऐसा है समशेर शिकारी .....

वाग वचन पकड़ ले पूरा चढ़ले सोवन पाज । (२)
ललकारी कर मार ले काल कूं (२) जीत ले नगर राज, सुरावीर जीत ले नगर राज ।।
ऐसा है समशेर शिकारी .....

अनोपस्वामी काल कूं मारा, मन को लिया जीत । (२)
सोनी हरिचन्द बाण को फैकिया (२) नाम तणी प्रतीत, सुरावीर नाम तणी प्रतीत ।।
ऐसा है समशेर शिकारी .....

राग-खमास पृथ्वी परीयाण भजन-५

ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अणमें बोले सांई ।
भीतर बाहर दम को देखो, अन्दर बाहर जोत परखलो
आगम बेगम तुंई निरंजन आगम बेगम तुंई ।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अणमें बोले सांई ।। टेर ।।

पृथ्वी आदू देव केवीजे, पृथ्वी पीले रुप । (२)
अण पृथ्वी में देवता रमे, (२) अण पृथ्वी में भूप निरंजन अण पृथ्वी में भूप ।।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अण में बोले सांई.....

अण पृथ्वी में घोर पड़े है, अण पृथ्वी में गाज । (२)
अण पृथ्वी में वाजा वाजे, (२) अण पृथ्वी में राज निरंजन अण पृथ्वी में राज ।।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अण में बोले सांई.....

अण पृथ्वी में रमते खेलते, अण में मंगल गाये । (२)
अण पृथ्वी में वावते लणते, (२) अण पृथ्वी में पाये निरंजन अण पृथ्वी में पाय ।।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अण में बोले सांई.....

अण पृथ्वी में मानव मोरा, अण पृथ्वी में जीव । (२)
अण पृथ्वी में लख्र चौरासी, (२) पृथ्वी आदु पीव निरंजन पृथ्वी आदु पीव ।।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अण में बोले सांई.....

आ पृथ्वी कूदरत से बणी, अण में पांचोई तंत । (२)
अण में तीनोई गुण वसत है, (२) सांभलो साधु संत निरंजन सांभलो साधु संत ।।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अण में बोले सांई.....

अनोपस्वामी पूरण मलिया, दिया वचन बाण । (२)
सोनी हरिचन्द प्रेम से गाया, (२) पृथ्वी रा परीयाण निरंजन पृथ्वी रा परीयाण ।।
ओ धणी कूं भूलणा नहीं, अण में बोले सांई.....

राग-खमास पृथ्वी सरग भजन-६

प्रेम से पूरी फेरलो माला हेत से हीरो पाई ।
पीले गटागट देख दमोदम (२) आद की माला आई ।
संतो भाई आद की माला आई ।।
प्रेम से पूरी फेरलो माला हेत से हीरो पाई ।। टेर ।।

स्वर्गलोक आ पृथ्वी जोयलो, जोयलो वैकुण्ठ आई । (२)
पछे आद निरंजन देव कूं सेवो, (२) ॐ से करो उपाई संतो भाई ॐ से करो उपाई ।।
प्रेम से पूरी फेर लो माला हेत से हीरो पाई.....

आद कला कूं याद करिजे, अंतर में ओळ्खाई । (२)
काल क्रोध कूं मार हटालो, (२) मकर ने मस्ताई संतो भाई मकर ने मस्ताई ।।
प्रेम से पूरी फेर लो माला हेत से हीरो पाई.....

संत केवीजे सूरमा ओ ज्यांरे, काल न दीसे कांई । (२)
नाम पकड़ के देख दया कूं, (२) आतम पाल बधाई संतो भाई आतम पाल बधाई ।।
प्रेम से पूरी फेर लो माला हेत से हीरो पाई.....

देवपुरी में देव निरंजन, देखलो ज्योत जगाई । (२)
ज्यां हीरा संदी हाट मंडाणी,(२) जोयलो नगर जाई संतो भाई जोयलो नगर जाई ।।
प्रेम से पूरी फेर लो माला हेत से हीरो पाई.....

टगसारो कारीगर ज्यांरे, लाख्या लेवण आई । (२)
हर हीरा कूं देख सुरत से,(२) मूंगे मोल बिकाई संतो भाई मूंगे मोल बिकाई ।।
प्रेम से पूरी फेर लो माला हेत से हीरो पाई.....

अनोपस्वामी देव सरुपी, हीरदे हीर बताई । (२)
सोनी हरिचन्द फेरली माला, (२) आतम में ओळ्खाई संतो भाई आतम में ओळ्खाई ।।
प्रेम से पूरी फेर लो माला हेत से हीरो पाई.....

राग-खमास जोगाराम भजन-७

प्रीत सरुपी परस अखंडी देही में देवत वोही । (२)
नाभ से उलट देख सूरत से (२) जगत रुपी जोई, संतो भाई जगत रुपी जोई ।
प्रीत सरुपी परस अखंडी देही में देवत वोही ।। टेर ।।

आद से उगम देख कूदरती, मालिक मंडप मांही । (२)
मूल को बांध के छेद शिखर कूं, (२) पवन डोर में पोई, संतो भाई पवन डोर में पोई ।।
प्रीत सरुपी परस अखंडी.....

रोपले नेजा नाभ के ऊपर, हेत से हाजर होई । (२)
खेल बाजीगर चढ़े शिखर पे, (२) आद को भजन ओई, संतो भाई आद को भजन ओई ।।
प्रीत सरुपी परस अखंडी.....

पांच नटुरी पांच बाजीगर, करलो खबर कोई । (२)
मृदंग ताल को मन बजावत, (२) नटुआ नासण तांई, संतो भाई नटुआ नासण तांई ।।
प्रीत सरुपी परस अखंडी.....

पांच नटुरी पूरिया आसण, सुगम सील संजोई । (२)
पांच बाजीगर खेल रचायो, (२) देखण आया दोए, संतो भाई देखण आया दोए ।।
प्रीत सरुपी परस अखंडी.....

चढ़ीया शील शिखर के ऊपर, घोर पड़े घट मांही । (२)
सुन का शहेर में रास रचायो, (२) मलिया आतम सांई, संतो भाई मलिया आतम सांई ।।
प्रीत सरुपी परस अखंडी.....

अनोपस्वामी रास रचायो खेल बतायो मोई
सोनी हरिचन्द शील सरुपी, (२) देखलो दरशण सोई, संतो भाई देखलो दरशण सोई ।।
प्रीत सरुपी परस अखंडी.....

राग-देशी सरगुणी भजन-१

वारी चेत सको तो चेतो, थांरे शील धरम रा वोतो । (२)
जणसुं बंधण छूटे, वे पगवी आवे पूठे ओ जी जी ।। टेर ।।

वारी जनम लिया भवजुग में, थांरे बंधन पड़िया पग में । (२)
वारी कहो किसीवद छूटे, वे पगवी आवे पूठे ओ जी जी ।।
वारी चेत सको तो चेतो.....

वारी जाय ओ जनम थांरो वीतो, थे हरी भजन को जीतो । (२)
थांरे कबद बांधलो खूंटे, वे पगवी आवे पूठे ओ जी जी ।।
वारी चेत सको तो चेतो.....

वारी आद कला नहीं जाणी, वो भटकत फिरे अड़ाणी । (२)
ज्यांरे अकल कसीवद उठे, वे पगवी आवे पूठे ओ जी जी ।।
वारी चेत सको तो चेतो.....

वारी भेख भेद वण गावे, वो मरदंग ताल बजावे । (२)
कोई लकड़ ख्यालड़ी कूटे, ज्यांरे पगवी आवे पूठे ओ जी जी ।।
वारी चेत सको तो चेतो.....

कोई धरम नाम में जूता, ज्यांरे जख्म मारे जमदूत्ता । (२)
कोई बोल वचन के झूठे, ज्यांरे पगवी आवे पूठे ओ जी जी ।।
वारी चेत सको तो चेतो.....

वारी अनोपदास गुरु पाया, जणे आद भेद ओळ्ख्याया । (२)
सोनी हरिचन्द ज्ञान घुटे, सतगुरु से बंधन छूटे ओ जी जी ।।
वारी चेत सको तो चेतो.....

राग-देशी निरगुण भजन-२

वारी देव कला दरसीजे ज्यांरे परम ज्योत परसीजे । (२)
ज्यां चढ़े शिखर पर आया ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।। टेर ।।

वारी समरु ओ सरस्वत मांई, थे सरब गुणों सुखदाई । (२)
वारी आसण पदम चढ़ाया, ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।।
वारी देव कला दरसीजे.....

वारी नाभ कमल से जागी, वो डोर गगन से लागी । (२)
वटे नरभे थम्ब ठेहराया, ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।।
वारी देव कला दरसीजे.....

वारी उलट चढ़े कोई वादी, ज्यांरे छूटे जाल उपाधी । (२)
वारी चढ़के शंख बजाया, ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।।
वारी देव कला दरसीजे.....

वारी अला पींगला आवे, ज्यां सुखमण वेंण बजावे । (२)
ज्यां सुरती तार मिलाया, ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।।
वारी देव कला दरसीजे.....

वारी नटु वरत पर नाचे, ज्यां ब्रह्मा वेद कूं वांचे । (२)
ज्यां धणी तख्त पर आया, ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।।
वारी देव कला दरसीजे.....

वारी सतगुरु अनोपदासजी, जणे ब्रह्म समाधि साजी । (२)
वारी सोनी हरिचन्द गाया, ज्यां गुरु गुणपती धाया ओ जी जी ।।
वारी देव कला दरसीजे.....

राग-विहाग भजन-१

वारी भेद कूदरती, देखो मगज में (२) समरो स्वास उसासा जी जी ।
वारी दिलका देव, देखलो तन कर (२) आठ पहोर उजासा जी जी ।। टेर ।।

वारी धरणी आद, सरब गुण रचिया (२) पग-पग गुण परकाशा जी जी ।
वारी ज्यों की कला, सकल में दरसे (२) रचिया सब रंग रासा जी जी ।।
वारी भेद कूदरती, देखो मगज में.....

वारी धरणी रुप, कसीवद दरसे (२) कणवद वे बरदासा जी जी ।
वारी सातोई कमल, तत्व गुण जोवो (२) जद आवे विश्वासा जी जी ।।
वारी भेद कूदरती, देखो मगज में.....

वारी हद का थंब, गगन सूं मेलो (२) ज्यां निरंजन का वासा जी जी ।
वारी सुरा वेसो, सनमुख चाले (२) कायर रा पग पासा जी जी ।।
वारी भेद कूदरती, देखो मगज में.....

वारी सूरा वीर, शिखर गढ़ चढ़ीया (२) घेरीया नगर नगासा जी जी ।
वारी धरणी रुप, जगत कर जोया (२) पूरी मन सब आशा जी जी ।।
वारी भेद कूदरती, देखो मगज में.....

वारी पांडव पांच, भजन का पूरा (२) ज्यांरा देव गुरु दुरवासा जी जी ।
वारी धरणी रा गुण, पांडवे जोया (२) नित रखते नरमासा जी जी ।।
वारी भेद कूदरती, देखो मगज में.....

वारी आप अनोप, धरण गुण धाया (२) रटते मासा मासा जी जी ।
वारी सोनी हरिचन्द, शीश नमाया (२) जुग जरणी का दासा जी जी ।।
वारी भेद कूदरती, देखो मगज में.....

राग-विहाग भजन-२

वारी हरका होए, हजूरी छाजे (२) वो सागर में तरता जी जी ।
वारी विकरम करे, वगत नहीं जोवे (२) फट थुलों संग फरता जी जी ।। टेर ।।

वारी करणी करे, कबद नहीं मेले (२) पर तरीया संग रळ्ता जी जी ।
वारी भीतर गांठ, भरम नहीं तुटे (२) कबद काळ से मरता जी जी ।।
वारी हरका होए, हजूरी छाजे.....

वारी मद माटी, पेट विष भरिया (२) नीत पाप में धरता जी जी ।
वारी गुरु हीण, वचन का वेरी (२) झूठ काल से झरता जी जी ।।
वारी हरका होए, हजूरी छाजे.....

वारी अवगुण छोड़, देव गुण लेवे (२) सुद-बुद अंग में भरता जी जी ।
वारी दिल में दया, रेण दिन ज्यां के (२) दुष्ट काल से डरता जी जी ।।
वारी हरका होए, हजूरी छाजे.....

वारी नेसल हुए, नाम गुण रटीयो (२) दम दम पेरी चढ़ता जी जी ।
वारी पांच पचीस, तीन गुण आदु (२) दम गुण सब वहां मिलता जी जी ।।
वारी हरका होए, हजूरी छाजे.....

वारी अण घर देवा, अलख अखाड़ो (२) नित नूर ज्यां वरता जी जी ।
वारी अज अविनासी, अलख बिराजे (२) विरला दरशण करता जी जी ।।
वारी हरका होए, हजूरी छाजे.....

वारी आप अनोप, गुण का सागर (२) गुण देख्यों मन ठरता जी जी ।
वारी सोनी हरिचन्द, वणज चलाया (२) वण एरण गुण घड़ता जी जी ।।
वारी हरका होए, हजूरी छाजे.....

राग-विहाग भजन-३

वारी नाव धरम की, जण सूं चाले (२) ज्यांरा खेवटिया किरतारा जी जी ।
वारी दिल दरियाव, चलावो जगत कर (२) जद लांघो भव पारा जी जी ।। टेर ।।

वारी उतपत आद, तंत तिरगुण में (२) जल अग्नि जुग सारा जी जी ।
वारी सरब जून ज्यांरे, दम सब घट में (२) वायु तंत विस्तारा जी जी ।।
वारी नाव धरम की, जण सुं चाले.....

वारी विक्रम पाप, तोड़ दो तनसुं (२) मारो सींग मजारा जी जी ।
पछे दम की माला, फेरलो दम से (२) दम से जो दिदारा जी जी ।।
वारी नाव धरम की, जण सुं चाले.....

वारी निरमल होए, निरंजन भेटो (२) खोलो देव द्वारा जी जी ।
वारी अण देवल में, अखंडी देवा (२) अधर ज्योत निराकारा जी जी ।।
वारी नाव धरम की, जण सुं चाले.....

वारी सुरता-नुरता, करे मुख आगे (२) ज्यांरा ब्रह्मदेव भरतारा जी जी ।
वारी रमझम पांव, घुंघरुं बाजे (२) वटे झालर रा झणकारा जी जी ।।
वारी नाव धरम की, जण सुं चाले.....

वारी बाजा अजब, बजे गढ़ भीतर (२) रण-रण राम रणुकारा जी जी ।
पछे दमकी डोर, सुगम चढ़ जोया (२) वटे उरस पुरुष दीदारा जी जी ।।
वारी नाव धरम की, जण सुं चाले.....

वारी अनोपदास गुरु, वेद उपाया (२) लिखिया गुण हीरदाराजी ।
वारी सोनी हरिचन्द, गुरु गम पाया (२) देख धरम की धारा जी जी ।।
वारी नाव धरम की, जण सुं चाले.....

राग-विहाग भजन-४

वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा (२) पकड़ो समझ सबूरा जी जी ।
वारी निरंजन देव, नूर में दरसे (२) वाजे अणहद तुरा जी जी ।। टेर ।।

वारी सरस्वत मांई, सदा गुण गावुं (२) भजन देवो भरपूरा जी जी ।
वारी गणपत स्वामी, महा घणनामी (२) काल कपट कर दूरा जी जी ।।
वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा.....

वारी भोलप किया, भगत नही वाजो (२) एतो काम करुरा जी जी ।
वारी पद निरवाणी, नाम उचारो (२) जद पावो पद पूरा जी जी ।।
वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा.....

वारी नाभी थरन, पांच तुरगुण में (२) हरदम हेर हजुरा जी जी ।
वारी स्वासे स्वास, उलट कर समरो (२) राख्यो हिम्मत घर दूरा जी जी ।।
वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा.....

वारी दुविधा दोषण, दूर कर दिलसु (२) मेटो फेल फितुरा जी जी ।
वारी सतगुरु कही, सूरत को बांधो (२) दरसे ज्योत जरुरा जी जी ।।
वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा.....

वारी जण धाया जण, सेजे पाया (२) गाज वीज घण-घोरा जी जी ।
वारी निरगुण रुप, देख्य देवल में (२) राज तेज रंग रुड़ा जी जी ।।
वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा.....

वारी आप अनोप, परम पद पाया (२) ज्यांरे केवल नाम सदुरा जी जी ।
वारी सोनी हरिचन्द, भजन विचारे (२) रटीया नही मगरुरा जी जी ।।
वारी मन कूं मारे, होए मर जीवा.....

❊ ❊

अनोप मण्डल वालों की तरफ से

जगत के भक्तजनों को राम राम ।

इतिश्री

● <u>प्रकाशक</u> ●

श्री अनोपस्वामीजी महाराज की झुंपडी

नकलंग धाम, झुण्डाल

सरदार पटेल रिंग रोड, नकलंग चौक,

मु. पो. झुण्डाल, जि. गाँधीनगर (गुज.)